A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 23 जून, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 286 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

न पेड़ रहा, न गाड़ी...

फोटोः बंसीलाल परमार

सुप्रभात

पानी, पानी रहता है
पानी कभी ख़राब नहीं होता
एकबार एक ट्रेनिंग में ,
एक वैज्ञानिक ने बताया था
कि ताजा पानी -बासी पानी
ऐसा कुछ नहीं होता
पानी ,पानी होता है !
पानी में कुछ मिल सकता है
जो गंदा हो ,
स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो
स्वाद अच्छा या बुरा
लग सकता है आपको
पी एच के कारण !
पानी में ,कहीं स्रोत में
कुछ मिल रहा हो
कैल्शियम ,मैग्निशियम
जो उसे भारी कर रहा हो
या लोहा
जो उसका रंग बदल रहा हो !
लेकिन पानी हर हाल में
पानी ही रहता है
बदलता नहीं अपनी 'प्रॉपर्टी '
यानी हिन्दी में कहें तो -गुणधर्म
आदमी के भीतर , बहुत भीतर
पानी जैसा कुछ होता है
चाहे दूर ,बहुत दूर
एक टिमटिमाते तारे की तरह !
ऐसा मुझे हमेशा लगता है।

– सोनल शर्मा

6 आरोपी हिरासत में

नीट का पेपर झारखंड से हुआ लीक

जली बुकलेट का नंबर हजारीबाग का, प्रोफेसर ने पेपर वॉट्सऐप पर मास्टरमाइंड को भेजा था

पटना (एजेंसी)। नीट एग्जाम विवाद में झारखंड पुलिस ने देवघर से शनिवार को 6 लोगों को हिरासत में लिया है। इन्हें बिहार के पटना ले जाया जाएगा। इस मामले में अब तक 19 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। उधर, दोनों राज्यों की पुलिस ने बताया कि नीट का पेपर झारखंड से ही लीक होने के सबूत मिले हैं। बिहार पुलिस का कहना है कि 5 मई को नीट की परीक्षा हुई थी। इस दौरान सूचना मिली थी कि कुछ स्टूडेंट्स और सेंटर के पास पेपर पहले से पहुंच गया है और उसे रटवाया जा रहा है। पुलिस जब वहां पहुंची तो जला पेपर मिला और बुकलेट नंबर 6136488 बरामद की गई थी। सूत्रों की मानें तो यह बुकलेट हजारीबाग के एक सेंटर की है। इससे यह माना जा रहा है कि पेपर झारखंड से ही लीक हुआ था। इधर जांच एजेंसी के हेड फिलहाल दिल्ली में हैं। सूत्रों की मानें तो उन्होंने अपनी जांच रिपोर्ट और अब तक की कार्रवाई से एनटीए और शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों को अवगत कराया है। हालांकि जांच एजेंसी की तरफ से अब तक इसे लेकर आधिकारिक रूप से कुछ नहीं कहा गया है। देवघर पुलिस ने बताया, जिन 6 लोगों को हिरासत में लिया गया है, उनमें बिहार के नालंदा जिले के रहने वाले परमजीत सिंह उर्फ बिट्टू, चिंटू शामिल है।

एनटीए में सुधार के लिए 7 सदस्यीय कमेटी का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। शिक्षा मंत्रालय ने शनिवार को एनटीए (नेशनल टेस्टिंग एजेंसी) की परीक्षाओं में गड़बड़ियां रोकने और पारदर्शिता लाने के लिए 7 सदस्यीय हाई लेवल कमेटी का ऐलान किया। इसरो के पूर्व चेयरमैन और आईआईटी कानपुर के पूर्व डायरेक्टर के. राधाकृष्णन इसके चीफ होंगे। यह कमेटी 2 महीने में शिक्षा मंत्रालय को रिपोर्ट सौंपेगी। नीट एग्जाम विवाद पर शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने 20 जून को प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसकी घोषणा की थी। शिक्षा मंत्री ने कहा था कि ये कमेटी एनटीए के स्ट्रक्चर, फंक्शनिंग, एग्जाम प्रोसेस, ट्रांसपेरेंसी, ट्रांसफर और डेटा, सिक्योरिटी प्रोटोकॉल को और इम्प्रूव करने के लिए शिक्षा मंत्रालय को सुझाव देगी। 2017 में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में एनटीए के गठन की घोषणा की थी।

आईएएस अधिकारी ने हड़प ली लकी अली की जमीन!

- कर्नाटक के बेंगलुरु का है मामला

बेंगलुरु (एजेंसी)। मशहूर सिंगर लकी अली ने आरोप लगाया है कि एक आईएएस अधिकारी और उनके परिवार के सदस्यों ने बेंगलुरु के बाहरी इलाके में उनकी कृषि भूमि हड़प ली है। विवादित संपत्ति कथित तौर पर येलहंका के कंचनहल्ली क्षेत्र में स्थित है। लकी अली ने कर्नाटक लोकायुक्त पुलिस में नौकरशाह रोहिणी सिंधुरी, उनके पति सुधीर रेड्डी और उनके बहनोई मधुसूदन के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

पेपर लीक हुआ तो 10 साल जेल, 1 करोड़ तक जुर्माना

देश में एंटी-पेपर लीक कानून आधी रात से लागू, नोटिफिकेशन जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में एंटी-पेपर लीक कानून यानी पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट, 2024 लागू हो गया है। केंद्र ने शुक्रवार की आधी रात इसका नोटिफिकेशन जारी किया। यह कानून भर्ती परीक्षाओं में नकल और अन्य गड़बड़ियां रोकने के लिए लाया गया है। इस कानून के तहत, पेपर लीक करने या आंसर शीट के साथ छेड़छाड़ करने पर कम से कम 3 साल जेल की सजा होगी। इसे 10 लाख तक के जुर्माने के साथ 5 साल तक बढ़ाया जा सकता है। परीक्षा संचालन के लिए नियुक्त सर्विस प्रोवाइडर अगर दोषी होता है तो उसे 5 से 10 साल तक की जेल की सजा और 1 करोड़ रुपए तक जुर्माना होगा। सर्विस प्रोवाइडर अवैध गतिविधियों में शामिल है, तो उससे परीक्षा की लागत वसूली जाएगी। नीट और यूजीसी-नेट जैसी परीक्षाओं में गड़बड़ियों के बीच यह कानून लाने का फैसला बड़ा कदम माना जा रहा है। इससे पहले, केंद्र सरकार और जांच एजेंसियों के पास परीक्षाओं में गड़बड़ी से जुड़े अपराधों से निपटने के लिए अलग से कोई ठोस कानून नहीं था। पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट, इसी साल 6 फरवरी को लोकसभा और 9 फरवरी को राज्यसभा से पारित हुआ था।

रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले लक्ष्मीकांत दीक्षित का निधन

- वाराणसी में चल रहा था इलाज, मणिकर्णिका घाट पर दाह संस्कार हुआ

वाराणसी (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के मुख्य आचार्य लक्ष्मीकांत दीक्षित का शनिवार सुबह निधन हो गया। 82 वर्षीय आचार्य पिछले कुछ दिनों से बीमार थे और गंभीर बीमारी की चपेट में थे। लक्ष्मीकांत प्राण प्रतिष्ठा आयोजन में पुजारियों की टीम में शामिल है। उनका मर्णिकर्णिका घाट पर दाह संस्कार किया गया। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दौरान लक्ष्मीकांत दीक्षित का प्रमुख पुजारी के रूप में चयन हुआ था।

केन्द्रीय रेल मंत्री श्री वैष्णव से हुई मुख्यमंत्री की चर्चा

इंदौर-उज्जैन के मध्य शुरू होगा मेट्रो ट्रेन संचालन - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के बड़े नगरों के लिए नए ट्रैफिक प्लान की जरूरत को देखते हुए राज्य सरकार महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रही है। इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण इंदौर-उज्जैन के मध्य मेट्रो ट्रेन के संचालन का निर्णय शामिल है, जो सिंहस्थ 2028 में श्रद्धालुओं के लिए आवाजाही की सुविधा की दृष्टि से भी उपयोगी होगा। इंदौर-उज्जैन के मध्य मेट्रो

चलाने से संबंधित फिजिबिलिटी सर्वे की रिपोर्ट प्राप्त हुई है। आने वाले समय में इंदौर एयरपोर्ट से महाकाल मंदिर तक वंदे मेट्रो की सुविधा प्रदेशवासियों और देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं के लिए एक अहम सौगात होगी। विभिन्न नगर परस्पर बेहतर ढंग से जुड़ सकेंगे। भोपाल में एम्स से करोंद चौराहे तक कुल 16.74 किलोमीटर की लंबाई में मेट्रो की लाइन तैयार करने का कार्य तीन चरणों में पूरा होगा। प्रथम चरण सात किलोमीटर का है, जिसमें 8 स्टेशन (एलिवेटेड) शामिल हैं। इंदौर मेट्रो की प्रगति पर भी बताया गया कि कुल 31.32 किलोमीटर में कार्य हो रहा है। इंदौर में कुल 28 स्टेशन बनेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास कार्यालय स्थित समत्व भवन में हुई बैठक में भोपाल और इंदौर के मेट्रो प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा के बाद कहा कि सुगम यातायात के लिए प्रदेश के बड़े नगरों जैसे भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन में मेट्रो के साथ वंदे मेट्रो, रोप-वे, इलेक्ट्रिक-बस और केबल-कार जैसे साधनों का उपयोग किया जाएगा।

वंदे मेट्रो सर्किल ट्रेन चलेंगी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव से हाल ही में हुई चर्चा के अनुसार मध्यप्रदेश में विभिन्न नगरों के लिए वंदे मेट्रो चलाने पर सहमति हुई है। पुरानी मेट्रो के स्थान पर वंदे मेट्रो सर्किल ट्रेन नागरिकों के लिए एक बड़ी सौगात होगी। ऐसे नगरों में जहाँ यातायात का दबाव बढ़ रहा है, वहाँ मेट्रो ट्रेन संचालन की दृष्टि से समेकित रूप से योजना बनाने के लिए सर्किल ट्रेन की सुविधा प्रारंभ करने पर सहमति हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की रेल मंत्री से मेट्रो ट्रेन की स्पीड से अधिक स्पीड से चलने वाली वंदे मेट्रो के संचालन, अत्याधुनिक तकनीक के प्रयोग और पीथमपुर-देवास जैसे औद्योगिक क्षेत्रों को लाभान्वित करने के संबंध में भी चर्चा हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में कुछ नगरों में उपलब्ध नेरो-गेज एवं अन्य रेल लाइन का उपयोग करने के संबंध में कहा कि इसका सर्वे एवं अध्ययन पूर्ण किया जाए ताकि वर्तमान में उपयोग में नहीं आ रहे रेल ट्रेक का उपयोग किया जा सके।

बैठक में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजेश राजौरा, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय श्री संजय कुमार शुक्ला, प्रमुख सचिव नगरीय विकास एवं आवास श्री नीरज मंडलोई और मध्यप्रदेश मेट्रो रेल कार्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारी उपस्थित थे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40.3 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे
भोपाल ■ रविवार, 23 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

सूखी धरती और झुलसेगी, रेगिस्तान बन जाएगा इलाका...

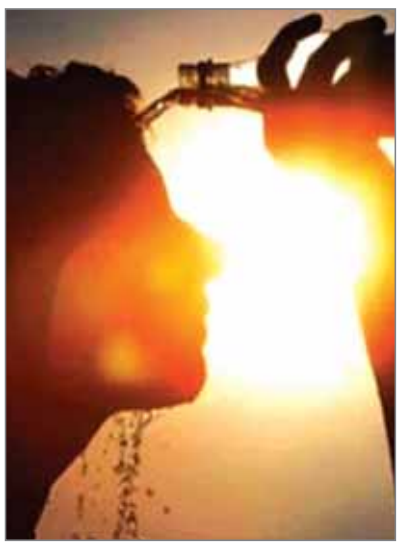

● गर्मी को लेकर डराने वाली है आईआईटी प्रोफेसर की यह चेतावनी ● हीटवेव्स बढ़ने से पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर पैदा हो सकता है खतरा

कानपुर (एजेंसी)। मार्च से लेकर जून तक पड़ी जानलेवा गर्मी से भले ही अब कुछ निजात मिल गई हो, लेकिन आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर राजीव सिन्हा ने चेताया है कि ऐसी हीटवेव्स की बारंबरता बढ़ी तो ये भूजल के अलावा हमारे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र (इकॉलजी) पर खतरा पैदा हो जाएगा। अभी पक्के तौर पर तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन मौसम शायद बड़े बदलाव की तरफ इशारा कर रहा है। दुनिया के कई बड़े पर्यावरण वैज्ञानिक इसे एक संकेत मान रहे हैं। अर्थ साइंसेज विभाग के प्रोफेसर राजीव सिन्हा ने कहा कि जब ज्यादा गर्मी पड़ती है, तो पौधे मिट्टी में मौजूद पानी को खींचते (इवैपोट्रांसपाइरेशन) हैं। ये पानी ही बाद में पत्तों पर बूंदों के तौर पर दिखता है। अपनी नमी बरकरार रखने के लिए ज्यादा

गर्मी में पेड़-पौधे ज्यादा पानी खींचेंगे, लेकिन इसकी एक क्षमता है। इस दौरान मिट्टी भी सूख जाती है। जब पेड़-पौधों को नमी नहीं मिल पाती, तो वे जल जाते हैं। जैसा हमने पिछले 2-3 महीनों में देखा। नदी, तालाब और पोखर जैसी जलनिधियां सिर्फ हमें पानी ही नहीं देतीं, बल्कि ये ग्राउंड वॉटर को रीचार्ज भी करती हैं। गर्म लहरों में जलनिधियों का पानी तेजी से वाष्पीकृत होता है। इस बीच लोग जमीन से खूब पानी लेते हैं। गर्मी और बारिश का मौसम सामान्य तरीके से चले तो बारिश में जमीन से निकाला गया पानी दोबारा रीचार्ज हो जाता है। ज्यादा हीटवेव्स आएंगी तो भूजल रीचार्ज का चक्र पूरी तरह बिगड़ जाएगा। भूजल कभी मॉनसून पूर्व की स्थिति में नहीं लौट पाएगा।

संक्षिप्त समाचार

आंध्र में जगन की पार्टी के दफ्तर पर चला बुलडोजर

● ऐक्शन में नायडू सरकार, वायएसआरसीपी ने बताया बदले की राजनीति

नई दिल्ली (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश में सत्ता बदल गई है, जिसके बाद नई सरकार के तहत प्रशासन धड़ाधड़ फैसले ले रहा है और शनिवार को राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी की पार्टी वायएसआरसीपी का कार्यालय ध्वस्त कर दिया गया। राज्य के विजयवाड़ा के तोडेपल्ले जिले में पार्टी का यह कार्यालय बुलडोजर की मदद से ध्वस्त कर दिया गया। इस केस में वायएसआरसीपी ने मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू पर 'बदले की

राजनीति' का आरोप लगाया है। पूर्व सीएम जगन मोहन रेड्डी की पार्टी ने कहा कि उसने आंध्र प्रदेश राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण की कार्रवाई को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था और एक रिट याचिका दायर की थी, जिसमें सुनवाई पूरी होने तक ताडेपल्ली में उनके केंद्रीय कार्यालय भवन के खिलाफ किसी भी कार्रवाई के खिलाफ आदेश देने का अनुरोध किया गया था। जानकारी के मुताबिक, वायएसआरसीपी का निर्माणाधीन केंद्रीय कार्यालय भवन कथित तौर पर 'अवैध रूप से कब्जे वाली' भूमि पर बनाया जा रहा था।

दीपक एडवरटाइजिंग ने अर्जित की शानदार दोहरी सफलता

दीपक एडवरटाइजिंग आज भारत की एडवरटाइजिंग इंडस्ट्री में एक बहुचर्चित नाम है। पिछले 27 वर्षों से अपनी क्रिएटिव कार्यशैली और हमेशा कुछ नया करने की सोच के कारण आज दीपक एडवरटाइजिंग प्रतिष्ठित कॉर्पोरेट और गवर्नमेंट क्लाइंट्स के बीच एक विश्वसनीय 360 डिग्री कम्युनिकेशन सॉल्यूशन प्रोवाइडर के रूप में जानी जाती है। शानदार दोहरी सफलता अर्जित करते हुए दीपक एडवरटाइजिंग ने फिर एक बार अपनी उत्कृष्टता साबित की है, जिसमें एजेंसी को ख्रुष्ट (लाइफ इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन) के भोपाल ज़ोन एवं अवंतिका गैस लिमिटेड द्वारा पुनः सूचीबद्ध किया गया है।

दीपक एडवरटाइजिंग के एमडी श्री दीपक जेठा ने इस उपलब्धि का श्रेय क्लाइंट्स का एजेंसी पर विश्वास और अपनी टीम के इनोवेटिव वर्किंग स्टाइल और कमिटमेंट को दिया।

दीपक एडवरटाइजिंग मध्य भारत की एकमात्र ढ्रूहस्, प्रसार भारती एवं ष्ट्क्क्ष्ट द्वारा मान्यता प्राप्त एजेंसी है। सर्वश्रेष्ठ सर्विस और यूनिक क्रिएटिविटी के कारण दीपक एडवरटाइजिंग 16 बार एजेंसी ऑफ़ द ईयर अवॉर्ड, सम्मिट इंटरनेशनल गोल्ड अवॉर्ड, प्लेटिनम एजेंसी ऑफ़ द ईयर अवॉर्ड जैसे 181 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड से सम्मानित है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हुए ह्ल्नद्ब (भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) के इवेंट्स और मध्य प्रदेश में हुए वंदे भारत एक्सप्रेस लॉन्च इवेंट व क्रेडाई के राष्ट्रीय स्तर के इवेंट के क्रिएटिव पार्टनर के रूप में दीपक एडवरटाइजिंग ने गत वर्ष भी खूब सुर्खियां बटोरी। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष एजेंसी की उत्कृष्ट सेवाओं को देखते हुए पश्चिम मध्य रेल, उत्तर पश्चिम रेलवे और देश की प्रख्यात वाटर स्टोरेज सोलूशन्स प्रोवाइडर कम्पनी %वेक्टस% द्वारा भी एजेंसी को पुनः सूचीबद्ध किया गया है।

म.प्र. में मानसून की एंट्री के बाद कई जिले भीगे

इंदौर-भोपाल संभाग में कई जगह गिरा पानी, आकाशीय बिजली गिरने से 5 की मौत

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में इंदौर, नर्मदापुरम, रायसेन, हरदा, सिवनी, सीहोर, इटारसी, महू और राजगढ़ जिले के सारंगपुर में शनिवार को बारिश हुई।

हरदा जिले के ग्राम हीरापुर में आकाशीय बिजली गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। प्रदेश में आकाशीय बिजली गिरने से 5 की मौत हो गई है। आज कई जिलों में बारिश का अलर्ट है।मौसम विभाग के अनुसार देवास, हरदा, रीवा, मऊगंज, सीधी, शहडोल, छतरपुर के खजुराहो, दक्षिण दमोह, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में आकाशीय बिजली गिरने या चमकने, हल्की गरज के साथ मध्यम आंधी चलने की संभावना है।

ग्वालियर, दतिया, बैतूल, शाजापुर, राजगढ़, भोपाल, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, इंदौर, धार के मांडू, बड़वानी, रायसेन के सांची और भीमबेटका, अशोकनगर, विदिशा के उदयगिरि, उज्जैन, आगर, सागर, पचमढ़ी, पन्ना, सिंगरौली, सतना के चित्रकूट, मैहर, उत्तरी दमोह, अनूपपुर के अमरकंटक, नरसिंहपुर, कटनी, उमरिया, जबलपुर, मंडला और डिंडौरी में बारिश होने का अनुमान है।

भोपाल में अगले 4 दिन तेज बारिश का अलर्ट,आज प्रवेश कर सकता है मानसून

भोपाल में अगले 4 दिन तेज बारिश का अलर्ट है। वहीं, भोपाल और संभाग के जिलों में अगले 24 घंटे यानी, रविवार तक मानसून एंटर हो सकता है। शनिवार को प्री-मानसून की एक्टिविटी बनी रहेगी। पूरे शहर में तेज बारिश हो सकती है। इससे पहले गुरुवार-शुक्रवार की रात और शाम को तेज बारिश हुई। सुबह 5 घंटे में सबसे ज्यादा बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर)????, गांधी नगर-एयरपोर्ट एरिया में एवरेज 4.8 इंच पानी गिरा था, जबकि सिटी क्षेत्र में 1.6 इंच बारिश हुई। नवी बाग में यह 3 इंच दर्ज की गई। शाम को बादल छा गए और तेज बारिश हुई। रात में भी मौसम बदला रहा।

छात्रों के लिए 22 जून 2024 को वृक्ष मिलन का आयोजन

भोपाल। बच्चों के जीवन और विकास , सुरक्षा एवं सहभागिता से जुड़े अधिकारों के प्रोत्साहन के लिए काम करने वाली वालंटरी संस्था चाइल्ड राइट्स आबजर्वेट्री मध्यप्रदेश ने बच्चों के लिए वृक्ष मिलन कार्यक्रम आयोजित किया है । स्कूली छात्रों के लिए यह अवसर अपने शहर अपने इलाके और अपने आसपास के पेड़ों से मुलाकात कर पेड़ों के नाम आयु, पता,पहचान, उपयोग और उनकी सेहत के हाल जानने और वृक्ष मित्र बन उसकी देखभाल की पहल करने का है । वृक्ष मिलन के तहत पेड़ों से मुलाकात का यह कार्यक्रम प्रदेश के बच्चों के लिए चलाया जाएगा । 22 जून 2024 को प्रातः 8ऱ00 बजे चिनार पार्क में पहला वृक्ष मिलन भोपाल के स्कूली छात्रों के लिए आयोजित किया गया है । इस निशुल्क मुलाकाती कार्यक्रम में विशेषज्ञ वृक्षों के विषय में छात्रों को विस्तार से जानकारी देंगे । वृक्ष मिलन कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक विद्यालयों/ छात्र वालेंटियर्स से अपेक्षा की गई है कि वे इस कार्यक्रम से जुडने के लिए चाइल्ड राइट्स आबजर्वेट्री मध्यप्रदेश के शिवाजी नगर स्थित कार्यालय या मोबा न 0 9425373383 पर संपर्क कर सकते हैं ।

ममता की नाराजगी दूर करने में जुटी कांग्रेस

प्रियंका के पक्ष में वायनाड में प्रचार के लिए मनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी लोकसभा चुनाव में भले ही कांग्रेस को अपने राज्य में एक भी सीट नहीं दी, लेकिन अब वह वायनाड में प्रियंका गांधी के पक्ष में चुनाव प्रचार के लिए जाएंगी। कांग्रेस पार्टी ने उनसे यह अनुरोध किया था, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है। इससे पहले ममता बनर्जी ने ही प्रियंका गांधी वाड्रा को वाराणसी से चुनाव लड़ाने का विचार दिया था। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने कोलकाता में सचिवालय में ममता बनर्जी के साथ बैठक की थी। सूत्रों ने बताया कि चिदंबरम गांधी परिवार के दूत के रूप में ममता से मिलने के लिए गए थे। टीएमसी सुप्रीमो कांग्रेस से नाराज हैं और उन्होंने कांग्रेस-टीएमसी गठबंधन वार्ता में विफलता के लिए विशेष रूप से बंगाल कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी को जिम्मेदार ठहराया है। बंगाल में टीएमसी की बड़ी जीत के बाद टीएमसी के दूसरे सबसे बड़े नेता अभिषेक बनर्जी कांग्रेस को छोड़कर विभिन्न मुद्दों पर उन्हें एक साथ लाने के लिए इंडिया गठबंधन के घटक दलों से मिलने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

आतंकी अमृतपाल के समर्थन में आए सुखबीर बादल

एनएसए बढ़ाने का किया विरोध; बताया-संविधान और मानवाधिकारों का उल्लंघन

चंडीगढ़ (एजेंसी)। खडूर साहिब से सांसद बने वारिस पंजाब दे प्रमुख अमृतपाल सिंह पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (ह्रस्न) की अवधि एक वर्ष बढ़ाने का शिरोमणि अकाली दल ने विरोध किया है। पार्टी अध्यक्ष सुखबीर बादल ने इस कदम को संविधान एवं बुनियादी मानवाधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता का स्पष्ट उल्लंघन बताया है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (ह्रस्न) के तहत असम की डिब्रूगढ़ जेल में बंद कट्टरपंथी उपदेशक अमृतपाल की हिरासत अवधि 23 अप्रैल, 2024 से एक वर्ष के लिए बढ़ा दी गई है। बादल ने सोशल मीडिया एक्स पर मुख्यमंत्री भगवंत मान पर निशाना साधते हुए लिखा कि उनका सिख विरोधी और पंजाब विरोधी चेहरा सामने आ चुका है। उन्होंने दिखा दिया है कि वह दिल्ली के इशारों पर कैसे नाचते हैं। भाई अमृतपाल सिंह के साथ हमारी विचारधारा के मतभेदों के अलावा, हम उनके खिलाफ या किसी और के खिलाफ दमन और अन्याय का विरोध करेंगे। बादल ने कहा कि मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि अकाली दल गुरु साहिबान द्वारा निर्धारित सिद्धांतों पर चलने वाली पार्टी है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमें इसके लिए कितनी भी राजनीतिक कीमत चुकानी पड़े। अकाली दल पंजाब में शांति, एकता और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए पूरी तरह समर्पित है और हम यह भी चाहते हैं कि सभी पार्टियां राजनीतिक हितों से ऊपर उठकर काले कानूनों का विरोध करें। बता दें कि असम की डिब्रूगढ़ जेल में नेशनल सिक्योरिटी एक्ट के तहत सजा काट रहे और हाल ही में पंजाब के खडूर साहिब से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव जीतकर सांसद बने अमृतपाल सिंह और उसके साथियों की नेशनल सिक्योरिटी एक्ट की मियाद को पंजाब सरकार ने 19 जून को एक साल के लिए बढ़ा दिया था। अमृतपाल की रिहाई के लिए परिवार और समर्थकों द्वारा प्रयास किए जा रहे थे।

राकांपा 'जागृति 2024' का उद्घाटन

राष्ट्रीय महासचिव बृजमोहन श्रीवास्तव ने किया

भोपाल। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के राष्ट्रीय महासचिव बृजमोहन श्रीवास्तव ने 21 जून 2024 को कोच्चि में 'जागृति 2024' राज्य नेतृत्व शिविर का उद्घाटन किया। अपने संबोधन के दौरान श्रीवास्तव ने आश्वासन दिया कि पार्टी का केंद्रीय कार्यालय केरल में पार्टी के समान विकास को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त सहायता प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजित पवार जी और राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल केरल में पार्टी को मजबूत करने के लिए बहुत उत्सुक हैं। श्रीवास्तव ने भाषण में कहा कि राष्ट्रीय नेतृत्व की ओर से मैंने आश्वासन दिया कि हमारी पार्टी विधानसभा से लेकर ग्राम पंचायत तक सभी चुनाव आपके चुनाव चिह्न घड़ी पर लड़ना चाहती है।

राज्य के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए श्रीवास्तव ने जोर दिया कि हम प्रफुल्ल पटेल के केंद्रीय सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल होने का इंतजार कर रहे हैं क्योंकि वे एक उल्लेखनीय विकास कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। श्रीवास्तव ने आश्वासन दिया कि केरल में विकास संबंधी पहलों पर भी इसी तरह ध्यान दिया जाएगा, ताकि राज्य दूसरों के लिए अनुकरणीय मॉडल बन सके।

कार्यक्रम की अध्यक्षता एनसीपी केरल के प्रदेश अध्यक्ष एन.ए. मुहम्मद कुट्टी ने की। राज्य उपाध्यक्ष के.ए. जब्बार और राज्य महासचिव जॉनी थोट्टाकारा सहित प्रमुख नेताओं ने भी सभा को संबोधित किया और राज्य की प्रगति के लिए पार्टी की रणनीतियों और भविष्य की योजनाओं को रेखांकित किया।

भीषण गर्मी का कहर मक्का में हर तरफ लाशें...

हज के दौरान मरने वालों की संख्या पहुंची 1000 के पार

98 भारतीयों की भी मौत, सऊदी की कोशिशें रहीं नाकाफी

रियाद (एजेंसी)। इस साल की हज यात्रा पर सऊदी अरब की भीषण गर्मी की वजह से हाजियों के लिए मुश्किल भरी रही है। इस साल हज के दौरान होने वाली मौतों का आंकड़ा 1,000 को पार कर गया है। जैसे-जैसे मरने वालों की संख्या बढ़ रही है, वैसे ही ये सवाल भी उठ रहा है कि सऊदी अरब में हुई इन मौतों के लिए खराब इंतजाम, भीषण गर्मी मौसम या फिर बड़ी तादाद में हाजियों की भीड़, किसे जिम्मेदार माना जाए। सऊदी अरब में सोशल मीडिया पर ऐसी सैकड़ों तस्वीरें और वीडियो शेयर हो रहे हैं, जिनमें हाजी सड़क के किनारे बेहोश या फि मृत पड़े दिख रहे हैं। कई तस्वीरों में इन लोगों को देखकर लगता है कि लाशों को वहीं छोड़ दिया गया है। डीडब्ल्यू की रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी के पवित्र शहर मक्का में हज के दौरान तापमान 51.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया।

इस भीषण गर्मी के बीच आश्रय और पानी की कमी ने हजारों तीर्थयात्रियों की जान ली। सऊदी अरब में इस साल दुनिया भर से करीब 18 मुसलमानों के हज करने के लिए पहुंचे थे। हाजियों की बड़ी संख्या ने भी चीजों को बद से बदतर किया। सऊदी अरब के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मौतों के आधिकारिक आंकड़े जारी नहीं किए हैं।

भारत आईं शेख हसीना, मोदी ने दिया रेड कार्पेट वेलकम

तीस्ता नदी पर चर्चा करेंगे, इस पर चीन की मदद से बैराज बनाएगा बांग्लादेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के भारत दौरे का शनिवार को दूसरा दिन था। शनिवार को राष्ट्रपति भवन में पीएम मोदी ने उनका स्वागत किया। इसके बाद उन्हें सेरिमोनियल वेलकम दिया गया। पीएम हसीना ने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। प्रधानमंत्री शेख हसीना ने पीएम मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक की। इसके बाद जॉइंट स्टेटमेंट के दौरान पीएम मोदी ने कहा, हम पिछले 1 साल में करीब 10 बार मिले हैं, लेकिन फिर भी पीएम शेख हसीना का यह दौरा अहम है, क्योंकि वे हमारे तीसरे कार्यकाल में पहली स्टेट गेस्ट के तौर पर आई हैं। पीएम मोदी ने बताया कि दोनों देशों के बीच भारतीय करेंसी में व्यापार शुरू हो चुका है। पिछले साल दोनों देशों ने साथ मिलकर कई प्रोजेक्ट्स को पूरा किया। बांग्लादेश विकास में भारत का सबसे बड़ा पार्टनर है और उनके साथ हमारे रिश्ते बेहद अहम हैं। मैं शाम के क्रिकेट वर्ल्ड कप मैच के लिए भी दोनों टीमों को बधाई देता हूं। पीएम मोदी ने आगे कहा, भारत-बांग्लादेश मैत्री सैटेलाइट

हमारे संबंधों को नई ऊंचाई देगी। हमारा फोकस दोनों देशों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। भारत और बांग्लादेश को 54 साझा नदियां जोड़ती हैं। बांग्लादेश में तीस्ता नदी के संरक्षण और प्रबंधन पर बातचीत के लिए जल्द एक टेक्निकल टीम बांग्लादेश जाएगी।

परिक्रमा

हार के कारणों की खोज तो जीत के अन्तर को लेकर चिन्ता

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

लोकसभा चुनाव के बाद तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री बनने वाले नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार गठित हो गई है तो वहीं उनके सामने एक मजबूत प्रतिपक्षी दल कांग्रेस भी सदन में मौजूद होगा। भाजपा, कांग्रेस सहित अन्य दल जिन्हें जहां कहीं अपनी अपेक्षा के अनुरुप नतीजे नहीं मिले हैं वह इस बात की समीक्षा कर रहे हैं कि आखिर वे क्या कारण हैं जिनके चलते हुए उन्हें उनकी अपेक्षा के अनुसार प्रतिसाद नहीं मिला है। कांग्रेस उन राज्यों में समीक्षा कर रही है जहां उसे उम्मीद से कम सफलता मिली है और ऐसा ही कुछ राज्यों में भारतीय जनता पार्टी भी कर रही है। मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी इस बात को लेकर चिंतन करते हुए कारण खोजने की कोशिश कर रही है कि कुछ क्षेत्रों में उसे अपेक्षा से कम लीड क्यों मिली। बीजू जनता दल और केसीआर की बीआरएस पार्टी को भी इस बात की समीक्षा करना चाहिये कि आखिर उसे मतदाताओं ने इस बुरी तरह क्यों नकार दिया। पंजाब और दिल्ली में जो चुनाव नतीजे आए उनको लेकर आम आदमी पार्टी का भी चिंतित होना स्वाभाविक है। महाराष्ट्र में तो हार के बाद भाजपा एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजीत पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को इन चुनावों में गहरी निराशा क्यों हाथ लगी जबकि उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना और शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को अच्छी-खासी सफलता मिली। इस राज्य में भाजपा सिंगल डिजिट में आ गई है और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाले गठबंधन को मतदाताओं ने हाथों-हाथ लिया है। कांग्रेस ने तो कुछ राज्यों में कारणों की खोज के लिए वरिष्ठ नेताओं की समितियां भी बना दी हैं। इन राज्यों में मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ छत्तीसगढ़ भी शामिल हैं।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सांसद राहुल गांधी ने यह साफ कर दिया है कि वह उत्तरप्रदेश की रायबरेली की उस परम्परागत सीट को अपने पास रखेंगे जिसका प्रतिनिधित्व उनके दादा , फिरोज गांधी, दादी श्रीमती इंदिरा गांधी और माता सोनिया गांधी ने किया था। वायनाड की उनके द्वारा सीट खाली की गयी है वहां से उनकी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा चुनाव लड़ेंगी। इस प्रकार संसदीय राजनीति में लोकसभा के माध्यम से प्रवेश करने की दिशा में प्रियंका गांधी सधे हुए कदमों से आगे बढ़ती नजर आ रही हैं। देखने वाली बात यही होगी कि अमेठी में गांधी परिवार के विश्वासपात्र किशोरी लाल शर्मा से डेढ़ लाख मतों से हारने वाली स्मृति ईरानी वायनॉड में प्रियंका गांधी का मुकाबला करने का साहस करेंगी या नहीं, क्योंकि वहां पर असली चुनावी मुकाबला कांग्रेस नेतृत्व वाले यूडीएफ और वामपंथियों के नेतृत्व वाले एलडीएफ में ही होता रहा है। पहली बार केरल में भाजपा ने अपना खाता तो खोल दिया है और उसके मतों में भी वृद्धि हुई, लेकिन पूरे राज्य में अभी भाजपा का इतना असर नहीं है कि श्रीमती ईरानी प्रियंका गांधी को कोई बड़ी चुनौती दे पायें। यदि स्मृति ईरानी वहां से चुनाव लड़ती हैं तो फिर देखने वाली बात यह होगी कि वह दो मुख्य प्रतिद्वंद्वियों में अपना स्थान बना

पाती हैं या चुनावी लड़ाई यूडीएफ और एलडीएफ के बीच होगी।

कांग्रेस ने गठित की फैक्ट फाइंडिंग कमेटी

लोकसभा चुनाव में अपनी खराब परफारमेंस को लेकर कांग्रेस हाईकमान फिलहाल सख्त रुख अपनाने के मूड में दिख रहा है। मध्यप्रदेश सहित आठ राज्यों में कांग्रेस का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। यदि यहां उसका प्रदर्शन कुछ अच्छा होता तो देश का राजनीतिक परिदृश्य कुछ बदलाहट लिए हो सकता था। मध्यप्रदेश में कांग्रेस को और अधिक निराशा हाथ लगी है क्योंकि इस बार उसे एक भी लोकसभा सीट पर सफलता नहीं मिली। यहां तक कि किसी आमचुनाव में संभवतः पहली बार कांग्रेस का छिंदवाड़ा का किला भी ढह गया है । वैसे ऐसा नहीं है कि यहां कभी कांग्रेस की पराजय न हुई हो, लोकसभा के एक उपचुनाव में कांग्रेस के कमलनाथ को पूर्व केंद्रीय मंत्री और मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा ने पराजित कर दिया था और यह उपचुनाव स्वयं कमलनाथ के द्वारा ही लादा गया था, क्योंकि जब कांग्रेस हाईकमान ने उनकी जगह उनकी पत्नी अलका नाथ को टिकट दिया और वह सांसद बन गईं तो कुछ वर्ष बाद उनसे त्यागपत्र दिलाकर कमलनाथ स्वयं सांसद बनना चाहते थे लेकिन उनकी इन उम्मीदों पर छिंदवाड़ा के मतदाताओं ने पानी फेर दिया और दूसरी बार उस समय पानी फेरा जब उनके पुत्र कांग्रेसी सांसद नकुल नाथ को भाजपा के विवेक साहू ने भारी मतों के अन्तर से पराजित कर दिया जबकि साहू को कमलनाथ विधानसभा चुनाव में दो बार पटकनी दे चुके थे। कांग्रेस आलाकमान को भी इस बात से झटका लगा कि उसका एक मजबूत किला ढह गया जो कि 1977 की प्रचंड जनता लहर में भी सुरक्षित रहा था। कांग्रेस ने मध्यप्रदेश के लिए फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाई है जिसमें महाराष्ट्र के दिग्गज कांग्रेस नेता और पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, गुजरात के फायर ब्रांड कांग्रेस नेता विधायक जिग्नेश मेवानी और उड़ीसा के सांसद सप्तगिरि उल्का हैं। यह समिति उन कारणों का पता लगायेगी जिसके कारण राज्य से पहली बार कांग्रेस का लोकसभा चुनाव में सफाया हो गया है। सवाल यह है कि क्या यह फैक्ट फाइंडिंग कमेटी कांग्रेस में व्याप्त गुटबंदी की उस तह तक पहुंच सकेगी जिसके चलते हर बड़ा नेता यह मानता है कि उसका गधा सामने वाले के घोड़े से अधिक बेहतर है।

और यह भी

एक तरफ मध्यप्रदेश में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन अभी तक का सबसे निराशाजनक रहा है और इसके लिए फैक्ट फाइंडिंग कमेटी का गठन हुआ तो इसके साथ ही कानाफूसी में जीतू पटवारी को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाने की जो खबरें चल रही थीं वे अचानक तेज हो गयीं हैं। इन चर्चाओं को उस समय विराम लगता नजर आया जब प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी जीतेन्द्र सिंह ने कहा कि उन्हें हटाने की चर्चायें निराधार हैं क्योंकि जीतू को काम करने का बहुत ही कम समय मिला है और पटवारी अभी काम करते रहेंगे। एक प्रमुख हिंदी दैनिक समाचार पत्र से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन जैसी कोई बात नहीं है, यह खबर केवल सोशल मीडिया तक ही सीमित है। पटवारी को प्रदेश अध्यक्ष बने हुए कुछ ही समय हुआ है और उन्हें काम करने का कम मौका मिला है, अभी संगठन में मजबूती के साथ अन्य कई काम बाकी हैं। जीतेन्द्र सिंह ने यह स्वीकार किया कि मध्यप्रदेश में संतोषजनक परिणाम नहीं आये हैं इसीलिए प्रदेश में फैक्ट फाइंडिंग कमेटी का गठन किया गया है जिसमें वरिष्ठ नेता शामिल हैं। चुनाव के दौरान जो कमियां रही होंगी उन्हें दूर किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में अभी तक केवल प्रदेश अध्यक्ष को मनोनीत किया गया है तथा वे कुछ पुराने पदाधिकारियों के साथ मिलकर अपना कामकाज कर रहे हैं। आदिवासी नेता और पूर्व मंत्री उमंग सिंघार को नेता प्रतिपक्ष बनाया गया है तथा हेमंत कटारे उपनेता बनाये गये हैं। इससे लगता है कि प्रदेश कांग्रेस के गठन में कांग्रेस सभी क्षेत्रों, वर्गों और जातियों को स्थान देने का प्रयास करेगी ताकि वह अपनी खोई जमीन को फिर से पा सके। कांग्रेस के लिए फिलहाल तो मध्यप्रदेश में उर्वरा जमीन नजर नहीं आ रही है क्योंकि कांग्रेस ज्यादातर ट्वीटर व सोशल मीडिया प्लेटफार्मों और विभिन्न चैनलों पर होने वाली बहसों तक सिमट कर रह गयी है। जमीन से कटे लेकिन नेताओं की गणेश परिक्रमा करने वाले लोगों को जब तक चिन्हित कर कांग्रेस उनकी जगह नये मैदानी व जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं को तवज्जो नहीं देगी तब तक कोई खास बदलाव होने वाला नहीं है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 24 जून को वीरांगना रानी दुर्गावती के समाधि स्थल पर करेंगे नमन

जबलपुर में वीरांगना के जीवन पर केन्द्रित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की जाएगी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े बलिदानी व्यक्तित्व समाज के लिए सदैव सम्मानीय रहेंगे। इनके बलिदान से आज की पीढ़ी को अवगत करवाना आवश्यक है। वीरांगना रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस 24 जून पर जबलपुर में हो रहे कार्यक्रम के साथ ही रानी दुर्गावती की जयंती पर आगामी 5 अक्टूबर को विभिन्न आयोजन किए जाएं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को समत्व भवन से 24 जून को जबलपुर में होने वाले कार्यक्रम की तैयारियों की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से समीक्षा कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. विजय शाह और कलेक्टर जबलपुर ने कार्यक्रम की तैयारियों से अवगत करवाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 24 जून को वीरांगना रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर नर्ई नाला, जबलपुर में हो रहे कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसमें अन्य जन प्रतिनिधि और नागरिक भी शामिल होंगे। वीरांगना रानी दुर्गावती को उनके समाधि स्थल पर आदरांजलि दी जाएगी। इस अवसर पर एक अन्य कार्यक्रम में वेटनरी कॉलेज जबलपुर में संस्कृति विभाग द्वारा रानी दुर्गावती के जीवन पर आधारित नृत्य नाटिका की प्रस्तुति की जाएगी। स्वराज संस्थान की ओर से एक चित्र प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

रानी दुर्गावती के 500वें जन्मशताब्दी समारोह के अंतर्गत हर

वीरांगना के पंच-शताब्दी जन्म महोत्सव पर आयोजनों की श्रृंखला, 5 अक्टूबर को शौर्य यात्राएं पहुंचेंगी जबलपुर

माह कार्यक्रम- बैठक में बताया गया कि रानी दुर्गावती का यह 500 वाँ जन्मशताब्दी वर्ष है। पंच-शताब्दी जन्म महोत्सव के अवसर पर आगामी 5 अक्टूबर को प्रदेश के जनजातीय बहुल जिलों में स्थित विद्यालयों में निबंध और क्विज के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। जनपद पंचायत स्तर पर भी विभिन्न कार्यक्रम होंगे। जुलाई माह में छिंदवाड़ा, अगस्त माह में शहडोल और सितम्बर माह में मंडला में कार्यक्रम होंगे। जबलपुर में 5 अक्टूबर को मुख्य समारोह होगा, जिसमें अनेक विशिष्टजन शामिल होंगे। मध्यप्रदेश के साथ ही उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ से शौर्य यात्राएं जबलपुर पहुंचेंगी।

बैठक में मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजौरा, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय श्री संजय कुमार शुक्ला, प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य विभाग डॉ. ई रमेश कुमार एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में एक रुपए में कॉलेज पहुंचेंगे स्टूडेंट

1 जुलाई से सभी जिलों में शुरू होंगी बसें, कलेक्टर तय करेंगे रूट और राउंड

भोपाल (नप्र)। एमपी के सभी 55 जिलों में खुलने वाले पीएम एक्सीलेंस कॉलेज के स्टूडेंट्स से बसों में आने-जाने के लिए रोज एक रुपए किराया लिया जाएगा। यह किराया महीने के 30 दिन का 30 रुपए होगा। जिसे स्टूडेंट्स को कॉलेज प्रबंधन को चुकाना होगा। इसके बदले कॉलेज की बसों से वे अपने रूट पर कॉलेज और घर आ जा सकेंगे। बसों का रूट और राउंड कलेक्टर तय करेंगे। उच्च शिक्षा विभाग ने एक जुलाई से शुरू होने वाले पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में यह व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए हैं। सभी जिलों के कलेक्टरों और पीएम एक्सीलेंस कॉलेज के प्राचार्यों से कहा है कि सभी कॉलेज में यह व्यवस्था शुरू की जानी है और इसे शुरू करने के बदले आने वाले खर्च की भरपाई कॉलेज के जनभागादारी मद से की जाएगी।

विभाग ने यह निर्देश कॉलेज पीएम एक्सीलेंस कॉलेज खोले जाने के 10 दिन पहले जारी कर समय पर इसके टेंडर और सर्विस प्रोवाइडर सिलेक्शन का काम पूरा करने के लिए कहा है। मुख्यमंत्री की समीक्षा बैठक में बैठक में मुख्य सचिव वीरा राणा, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजेश राजौरा मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने बैठक में भी इस पर किया फोकस- इधर, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में उच्च शिक्षा विभाग के अफसरों के साथ समीक्षा बैठक की। जिसमें सभी जिलों में खोले जाने वाले कॉलेज की व्यवस्थाओं का रिव्यू किया। बैठक में पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में शुरू होने वाले पाठ्यक्रम और अन्य व्यवस्थाओं को पूरा करने के लिए सीएम ने अफसरों को निर्देशित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा- इसके लिए आवश्यक बजट भी उपलब्ध कराया है। एक्सीलेंस कॉलेज जिले का गौरव होगा। एक्सीलेंस कॉलेज से जिले की तहसीलों एवं जिले के नागरिकों को जोड़ें। शुभारंभ समारोह से जिले के नागरिक भी जुड़ें।

पहली कैबिनेट बैठक में हुआ था कॉलेज का फैसला- मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने 13 दिसंबर 2023 को शपथ लेने के बाद उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ल की मौजूदगी में पहली कैबिनेट बैठक की थी। जिसमें यह तय किया था कि प्रदेश में पीएम एक्सीलेंस कॉलेज खोले जाएंगे। मुख्यमंत्री ने इसके लिए हर जिले में एक्सीलेंस कॉलेज खोलने की घोषणा भी उसी दिन कर दी थी। इसके बाद हर जिले से कॉलेज का चयन कर उन्हें पीएम एक्सीलेंस कॉलेज के रूप में प्रमोट करने की कार्यवाही की गई।

सरकार की मंशा है कि पीएम एक्सीलेंस कॉलेज शिक्षा के क्षेत्र में उदाहरण बनें और रोजगारपरक शिक्षा देकर प्रदेश के युवाओं को सीधे रोजगार से जोड़ने का काम करें। इसीलिए पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में पर्यटन, संस्कृति विमानन समेत कई नए कोर्स शुरू करने का निर्णय भी सीएम डॉ.मोहन यादव ने लिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा महोत्सव कार्यक्रम,कहा

छात्रों की माता की भूमिका में रहें शिक्षक, मां की भाषा को छात्र के लिए बेहतर

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में शिक्षकों के रचनात्मक मैत्री समूह शिक्षक संदर्भ समूह द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय शिक्षा महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के कई जिलों से शिक्षक पहुंचे, इसके अलावा देश व विदेश से भी कई शिक्षा के जानकार यहां मौजूद रहे। इस दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर चर्चा की गई, इसके प्रावधानों पर चर्चा भी शिक्षकों ने की, इसके अलावा शिक्षक अपने अपने विद्यालयों में क्या क्या कर सकते हैं, इस पर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम में मौजूद राष्ट्रीय अध्यक्ष सीटीईएफ नागपुर डॉ के एम भंडारकर ने कहा कि शिक्षकों को हमेशा छात्र की माता की भूमिका में रहना चाहिए, क्योंकि मां की भाषा में छात्र बेहतर सुन और समझने की क्षमता रखते हैं और हमारे संगठन का नारा भी यही है कि सबसे पहले शिक्षक की व्यवस्था अच्छे से होनी चाहिए जिससे वह अपना हमेशा अच्छा परफॉर्मेंस कर सकें। समाज में कई लोग हैं जिनके पास सब कुछ है लेकिन जीवन जीने की कल नहीं है इसीलिए स्कूल पाठ्यक्रम में जीवन जीने की कला को शामिल करना चाहिए। जीवन कौशल के अभाव में बाकी सारे कौशल बेकार हो जाते हैं।

एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन की भागीदारी सबसे अधिक- इसके अलावा एक्सपर्ट डॉ. रवि प्रताप ने कहा कि एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन की भागीदारी सबसे अधिक होनी चाहिए, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर सुधार मिलें। शिक्षकों के बारे में जो समाज का नजरिया है, उसमें बदलाव की जरूरत है। समाज को शिक्षक के प्रति जागरूक समझ बनाने की आवश्यकता है, जो चंद शिक्षक हैं जो अच्छा काम नहीं कर रहे हैं उनके आधार पर सारे शिक्षकों के प्रति धारणा नहीं बनाना चाहिए। जो शिक्षक बहुत अच्छा काम कर रहे हैं उन्हें अपने शिक्षक साथियों को अच्छा काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अपने खर्चे पर पहुंचे शिक्षक- इस दौरान यहां मौजूद शिक्षक अजय छाबरिया ने बताया कि इस कार्यक्रम में को शिक्षक मित्रों द्वारा आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में मौजूद सभी शिक्षक एवं अन्य अपने अपने खर्चा कर यहां आए हैं और दो दिन तक यहां रहेंगे।

डॉ गुलाब चौरसिया पहले शिक्षाविद- डॉ दामोदर जैन ने बताया कि डॉक्टर चौरसिया देश के ऐसे पहले शिक्षाविद थे, जिन्हें वर्ल्ड काउंसिल फॉर एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन का फैलो और आजीवन सदस्य चुना गया।

ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ एजुकेशनल एसोसिएशन के दो बार अध्यक्ष रहे डॉक्टर चौरसिया ने एजुकेशनल इंटरनेशनल के माध्यम से दुनिया भर के शिक्षकों को गरिमा और प्रतिष्ठा दिलाने की भरपूर कोशिश की। वे वर्ल्ड काउंसिल आफ करिकुलम एंड इंस्ट्रक्शन के अध्यक्ष बने और उन्होंने भारत के लिए विशिष्ट गौरव प्राप्त किया।

भोपाल में एटीएम बदलकर निकाले 40 हजार रुपए

मदद के बहाने बदल दिया था एटीएम कार्ड, मामला दर्ज

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पिपलानी क्षेत्र में एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी को एटीएम बूथ पर एक बदमाश ने चूना लगा दिया। आरोपी ने मदद के नाम पर एटीएम कार्ड बदला और बुजुर्ग के से 40 हजार रुपए निकाल लिए। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।पिपालानी थाना पुलिस के अनुसार फरियादी सुभाषचंद्र यादव पटेल नगर के निवासी है। वह एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी हैं।22 अप्रैल को सुभाषचंद्र यादव आनंद नगर चौकी के सामने स्थित एटीएम बूथ पर पैसे निकालने गए थे। जब वे एटीएम से पैसे निकालने की कोशिश कर रहे थे तो एक बार में पैसे नहीं निकल रहे थे। उन्होंने कई बार कोशिश की लेकिन पैसे नहीं निकल पा रहे थे। इसी दौरान बूथ पर खड़ा एक युवक उनकी मदद के लिए पास आया।

युवक ने उनका एटीएम कार्ड लिया और उसे इंसर्ट किया। लेकिन, इस बार भी पैसे नहीं निकले। इसी बीच युवक ने कार्ड बदलकर सुभाषचंद्र को दूसरा कार्ड दे दिया। सुभाषचंद्र कार्ड लेकर बाहर निकल गए।

साहित्य

हरेराम 'समीप'

महेश कटारे 'सुगम' की ग़ज़लों में लोक जीवन की खुशबू

जनकवि महेश कटारे 'सुगम' दुष्यंत और अदम गोंडवी की जनधर्मी गजल परम्परा को लगातार विकसित कर रहे हैं। उनकी ग़ज़लें सोशल मीडिया तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनता और कविता के क्षेत्र में बहुत चर्चित हो रही हैं। उनकी गजलों का मूल स्वर जीवन में व्याप्त विसंगतियों और व्यवस्थागत विद्रूपताओं के खिलाफ प्रतिरोध और प्रतिवाद का है, जो सीधे-सीधे आमजन से बावस्ता है।

महेश कटारे 'सुगम' का जन्म 24 जनवरी 1954 को जिला ललितपुर, उत्तरप्रदेश के पिपरई गांव में हुआ। उनका प्रारम्भिक जीवन बेहद कठिनाइयों में बीता। उन्होंने विद्यार्थी-जीवन से ही घर चलाने के लिए लिखा और कविसम्मेलनों में जाना शुरू कर दिया था। उनकी लेखन-यात्रा में अब तक दो कहानी संग्रह, एक खण्ड काव्य, एक नवगीत संग्रह, एक बालङ्ककविता संग्रह, एक कविता संग्रह,पांच बुंदेली गजल संग्रह तथा आठ हिंदी ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'गाँव के गेंवड़े' बुंदेली ग़ज़ल संग्रह तथा 'आवाज का चेहरा' हिन्दी ग़ज़लों का संग्रह जो 2013 में प्रकाशित हुआ, और बहुत चर्चा में रहा। 'आवाज का चेहरा' में 96 ग़ज़लें संग्रहीत हैं। उनकी कविताएँ और अनेक बुंदेली ग़ज़ल संग्रह विश्व विद्यालयीन पाठ्क्रम में पढ़ाये जा रहे हैं। उन्होंने बुंदेली में ग़ज़लें लिखकर उन्हें लोक ग़ज़ल बनाया और आम लोगों तक पहुँचाया। यूं तो सुगम जी अब तक चार हजार से अधिक ग़ज़लें लिख चुके हैं, जिनमें से अधिकांश पुस्तकों और पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हो चुकी हैं, लेकिन अभी बहुत सामग्री का पुस्तक रूप में आना बाकी है।

ग़ज़ल के संदर्भ में स्वयं महेश कटारे सुगम का कहना है, मैं आज ग़ज़ल को साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकारता हूँ और ग़ज़ल में सम्प्रेषणीयता की भूमिका को प्राथमिकता के तौर पर देखता हूँ। दिल में बेचैनी पैदा करने वाली ग़ज़ल को मैं अच्छा मानता हूँ। आज ग़ज़ल की दृष्टि इतनी व्यापक हो गई कि उसने समूची दुनिया के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। ग़ज़ल की जड़ता के समर्थक लोगों को उसका यह विकास भले ही गले न उतर रहा हो, लेकिन जो लोग उसकी जीवन्तता को महसूस करते हैं, उन्हें आज की ग़ज़ल के विकास को देखकर कहीं कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

प्रस्तुत संग्रह को पढ़ते हुए भी यह बात पुष्ट हो जाती है कि आज की हिन्दी गजल ने परम्परागत ग़ज़ल के मुहावरे को पूरी तौर से त्यागकर नई अभिव्यक्ति की राह पकड़ी है, जहाँ वह आम आदमी के सुख दुःख, उसकी मुश्किलें और उसके आत्म संघर्ष को स्वर दे रही है। इस सन्दर्भ में महेश कटारे सुगम की गजलों को आसानी से उद्धृत किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर हम यहाँ उनके इस संग्रह के चन्द अशआर प्रस्तुत करते हैं। सबसे पहले आत्मकथ्य के रूप में आये उनके ये शेर देखिये, जो उनके सरोकारों और मंतव्यों को स्पष्ट करते हैं-

मैं हूं ज्वालामुखी ख्यालों का
फूटने को मचल रहा हूं मैं
और यह भी कि-
खास अब अवाम तक पहुंचे कैसे ?
फिक्र अंजाम तक पहुंचे कैसे?

इस संग्रह का शीर्षक शेर भी उनके लेखन के अभीष्ट की ओर संकेत करता है

ढूंढ़ता आवाज का चेहरा मुझे
चीखकर खौफ़ो-ख़तर के सामने

इस संग्रह की गजलों से जाहिर होता है कि महेश बेहद संवेदनशील गजलकार हैं। वे अपने इस वर्तमान को देख कर बेचैन होते हैं, जिसमें उनके सामने जिन्दगी की चमक, उसका सौंदर्य, उसकी गरिमा अर्थात मानवीयता छीनी जा रही है, आज व्यक्ति और समाज की मानवीय सोच और उसके कोमल जज्बात जख्मी हो रहे हैं।

महेश की गजलों में ग्रामीण भारत की वर्तमान तस्वीर बार बार दिखाई देती है, जहाँ सीधा सरल किसान और मजदूर का यह आत्मसंघर्ष पूरी मार्मिकता से उजागर हुआ है। विडम्बना यह है कि एक बार आने के बाद ग्रामीण जन शहर से लौट जाना चाहता है, लेकिन लौट नहीं पाताङ्क

शहर के जिस्म पर कांटे उगे हैं
यहाँ अपना गुजारा अब नहीं है।

जब महेश कटारे 'सुगम' जीवन मूल्यों में आई गिरावट पर व्यंग्य से प्रहार करते हैं तब वे सम्पूर्ण मानव समाज के नैतिक आचरण को सम्बोधित होते हैं। सुगम ने यहाँ सम्बन्धों में आ रहे नैतिक क्षरण को लेकर एक

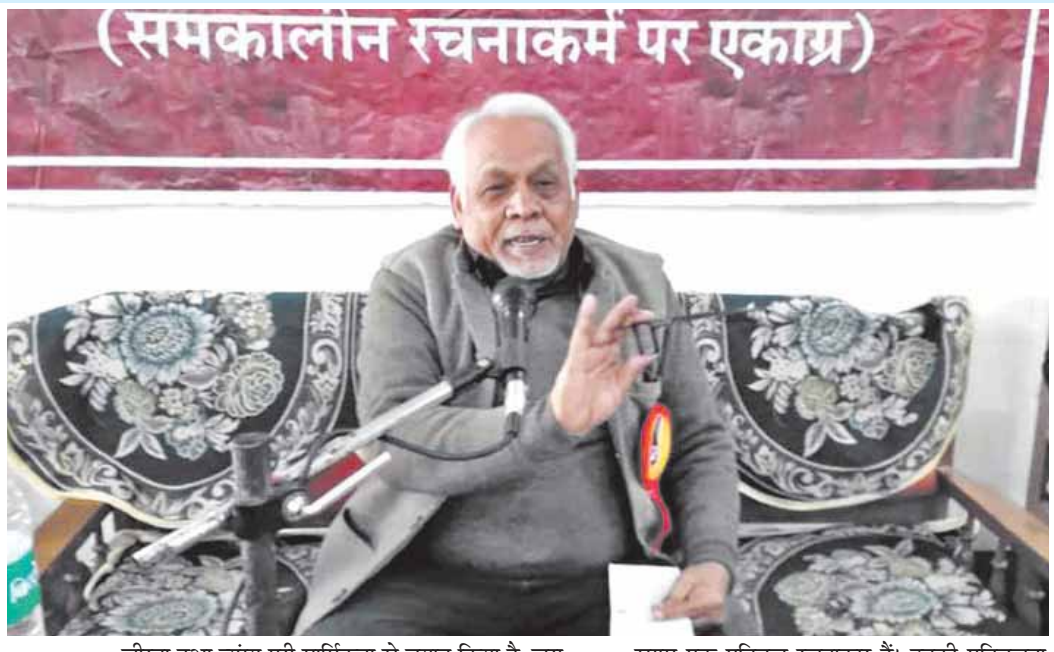

चीरता हुआ व्यंग्य पूरी मार्मिकता से बयान किया है, ज़रा देखें-

हदों को तोड़कर जब ज्यादती बेटे करें तो फिर
पिता अपने बनाए घर में रहना छोड़ देता है।

वे सदभावना व प्रेम को जीवन का एक मात्र रास्ता बताते हुए कहते हैं कि भारतीय संस्कृति का मूल प्रेम है, इसको अपनायें इसे समृद्ध करें। वे मानवप्रेम और मानव सेवा को ही इबादत या पूजा आराधना का पर्याय मानकर कहते हैं

किसी को राह दिखलाई किसी का जख्म सहलाया
किसी के अश्क जब पोंछे इबादत का मजा आया।

इसीलिये वे नमाज अदा करने या शिवाला जाने की अपेक्षा स्वयं को जानना आज की बड़ी जरूरत मानते हैंङ्क

मुझे तलाश खुदा की नहीं है अपनी है
नमाज कौन पढ़े जाए अब शिवाले कौन?

सुगम एक प्रतिबद्ध रचनाकार हैं। उनकी प्रतिबद्धता समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े आम आदमी के साथ है। उनके पास समाज के प्रति एक सार्थक दृष्टि है, जिसमें वे व्यवस्था के शिकंजे में जकड़े उस साधारण जन को देखते हैं जो निरीह और बेबस होता जा रहा है। वे उसमें चेतना जगाने का बेहद जरूरी काम करते हैं। आम आदमी का दर्द उनकी गजलों का स्थायी कथ्य बन गया है। वास्तव में उनकी शायरी का अधिकांश भाग आम आदमी के जीवन के ही इर्द-गिर्द घूमता मालूम होता है। उन्होंने समाज में बढ़ती असमानता को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है। आज के साधारण मनुष्य के संघर्षपूर्ण जीवन की अनेक छबियाँ उन्होंने अपने शेरों से प्रस्तुत की हैं। इन गजलों में शोषित और दमित जनता की आवाज़ है और व्यवस्था के प्रति गहरा और ज़रूरी आक्रोश है। आज के इस कठिन समय में यूँ प्रखर और विद्रोही गजलें लिखना साहस कर्म है और महेश यह काम सफलता पूर्वक सम्पन्न करते हैं। उनका यह साहस कबीराना है क्योंकि ये ग़ज़लें परम्परागत सभी रूढ़ियों को खारिज करती हैं। उन्होंने केवल शोषित, पराजित इन्सान की विवशता ही नहीं बल्कि राजनीतिक साजिशों का पर्दाफाश करते हुए परिवर्तन और क्रान्ति की आवाज बुलन्द की है। इस तरह उनकी गजलें बहुत पैने और धारदार हथियार की तरह भी काम करती हैं। वाकई में उन्होंने युग की व्यथा और उससे उपजी प्रतिरोध की चेतना उद्दीप्त किया है और संघर्ष की गजल को संभव बनाया है।

यह संग्रह हमें आज की ग़ज़ल के नए चेहरे से भी परिचित कराता है। उनकी अभिव्यक्ति शिल्प, भाषा और कथ्य तीनों दृष्टि से उत्कृष्ट है। अदम गोंडवी जिस गज़ल को गाँव तक ले जाने की बात करते थे, सुगम उसे वास्तव में ले जाते हैं, इनका यह बड़ा अवदान है और यही उनकी की गजल की पहचान भी है। इस ग़ज़ल संग्रह की ग़ज़लें गजल के अरुज पर कसी सुघड़ गजलें हैं। वे गजल के अरुज और भाषा के रखरखाव से अच्छी तरह से वाकिफ हैं।

महेश कटारे 'सुगम' की ग़ज़लों में सर्वत्र लोक जीवन की खुशबू मिलती है। उनकी गजलों में बुंदेली संस्कृति का रंग साफ़ दिखता है। उन्होंने अपनी संवेदनशील लोकभाषा में अपनी ग़ज़लों की रचना की है, जो आत्मीय भी हैं और विश्वस्नीय भी। उनके पास लोक-भाषा का अपना जो आत्मीय अंदाज़ है वह सहज ही पाठक को अपने साथ बहा कर ले जाता है।

इस तरह आवाज का चेहरा की गजलों के माध्यम से महेश कटारे 'सुगम' ने हिन्दी ग़ज़ल को नए स्वर, नए तेवर और नए संस्कार दिए हैं, जो जीवन से जुड़ी विविध समस्याओं की ओर सतत हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं और उनके समाधान में हमारे साथ रहती हैं।

इन गज़लों में गहरी राजनैतिक चेतना और हमारे समय का बोध है और आज की जिंदगी के संघर्ष की विकल आवाज़ है। अतः कहा जा सकता है कि यह संग्रह 'आवाज का चेहरा' हिंदी गजल की पहचान के नए द्वार खोलता है।

व्यंग्यिका

मूर्ख - विद्वान एक समान....

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

अब कीचड़ में
कमल नहीं खिल रहा!
गुड से मधुमक्खियाँ
चिपक रही हैं
काँच और हीरा एक समान
मूर्ख - विद्वान एक समान
अनैतिकता से सब व्यापार है
बगुला भगतों का भंडार है।

कोई सद्विचार नहीं, प्रवंच
प्रपंच, कुचक्र का व्यापार है।
कथनी और करनी में
अंतर का संसार है
दिमाग पर भ्रम का
बादल छाया हुआ है
आँखों में लोभ गहराया हुआ है।

आत्मा आकाश
धरती मोहपाश है
समय नहीं कि देखें
किस दिशा में जा रहे !
कैसा यह भ्रम जाल,
कैसी कुचाल है!
मानव माया का
घोर शिकार है।

व्यथा-कथा

रामेश्वरम तिवारी

वयं रक्षामः

धर्मी अपने सूने कक्ष में अकेला बैठा सोच रहा है कि जिस जनता के हितार्थ उसने अपने जीवन के स्वर्णिम पल कुरबान कर दिए। आखिर उस जनता ने उसके विजय-रथ को हस्तिनापुर से बत्तीस कदम की दूरी पर यमुना के किनारे क्योंकर रोक दिया!

धर्मी रात भर सिर खुजाने के बाद भी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। तभी ब्रह्ममूहुर्त में मुर्गे ने बाग दी। चिड़ियाओं के चहचहाने की आवाज़ आई। धर्मी थके-हारे मन से उठा और घर की खिड़कियों के सारे पर्दे हटा दिए। घर में बाहर से शीतल-मंद पवन के झोंके ने प्रवेश किया।

तभी धर्मी को लगा जैसे कोई बाहर द्वार पर दस्तक दे रहा है। धर्मी ने अन्यमनस्क भाव से द्वार खोला, तो क्या देखता है कि सामने मधुर मुस्कान बिखेरे सूर्य के समान तेजोमय मुख-मँडल लिए गुरु श्वेतकेशी खड़े हैं!

धर्मी ने आगे बढ़कर गुरु के चरण स्पर्श किए। गुरु ने धर्मी के स्कंध पर धीरे से थपथपाया और कक्ष में प्रवेश करते हुए बोले- पुत्र! लगता है, रात भर सोए नहीं हो। धर्मी ने संक्षिप्त में अपनी व्यथा-कथा कह सुनाई। श्वेतकेशी बिना किसी प्रतिक्रिया के चुपचाप धर्मी की बातें सुनते रहेज!

थोड़ी देर बाद शाँत स्वर में बोले- 'वत्स! देखो बात ऐसी है कि तुम्हारे राज्य में रावण द्वारा भेजे गए खर-दूषण घुस आए थे और तुम्हारे प्रहरी भाँग खाकर सोए रहे। खर-दूषण ने मिलकर 'वयं रक्षामः' का ढोल इतना ज़ोर-शोर से पीटा कि तुम्हारे राज्य की भोली-भाली जनता उस शोर-शराबे में अपने होशो-हवास खो बैठी!'

और दूसरी ओर तुम और तुम्हारे चंद बरदाई अपने ही विरुद-गान में डूबे रहे। पर 'अब सोचे का होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत!

एक स्मृति कथा

ब्रजेश कानूनगो

अनोखा प्रेम

दा साहब का पूरे इलाके में बड़ा रौब था. इसका मतलब यह नहीं कि उनके रुतबे और संपत्ति के कारण ही उनकी पूछ परख थी. वे गांव के कोई बड़े सेठ,साहूकार या जमींदार नही थे, किसान परिवार में जन्म लिया था और पूरे क्षेत्र व अपने गांव में सबका स्नेह सम्मान अपने स्वभाव और मिलनसारिता से खुद अर्जित किया था. उनका परिवार बहुत बड़ा था. परिवार में स्वजनों की संख्या तो बहुत कम थी परंतु पशुओं की संख्या उनसे भी अधिक थी. ज्यादातर गाय, बैल, भैंस के अलावा कुछ बकरियां भी उनके परिवार का हिस्सा थीं. जितना वे अपने रक्त संबंधियों से प्यार करते थे उतना ही प्रेम अपनी गायों और पशुओं से करते. अपने पशुओं को भी वे नाम से पुकारते थे।

दो गायों के नाम तो उन्होंने रमकुडी और झमकुडी रख छोड़े थे. जब भी वे चारागाह में चरती इन गायों को नाम देकर पुकारते वे दौड़ती हुई उनके पास चली आती थीं. इन गौ माताओं को दा साहब का विशेष स्नेह प्राप्त था. अपने बाड़े (तबेले) में जब दा साहब रमकुडी, झमकुडी की गरदन प्यार से सहलाते वह जैसे प्रफुल्लित हो जाती थी. दा साहब की उपस्थिति मात्र से तबेले के पशुओं में अनोखी खुशी की लहर दौड़ जाती थी. चारागाह और खेतों से लौटकर जैसे सारे पशु दा साहब का इंतजार ही करते रहते थे. ये एक ऐसा अलग प्रेम संबंध था जब दा साहब

रात को भी एक दो बार बाड़े में जाकर पशुओं को देख आते, चारा पानी की व्यवस्था कर देते, स्नेह से दुलार आते.

दीपावली का समय था. गांव के घर आंगन पशु आदि सज संवर रहे थे. लिपाई,पुताई के बाद दीवारें और आंगन मांडनो से भर गए थे. पशुओं के सींगों को रंगीन पेंट से रंगा गया था. गायों और अन्य

गौधन की देह पर रंग बिरंगी फूल पत्तियां बनाई गईं थीं. उनके गलों में कोडियों की मालाएं पहनाई जा रही थीं. पूरा वातावरण उल्लास से भर गया था. लेकिन दा साहब के बाड़े के पशु बहुत उदास नजर आ रहे थे. हालियों और अन्य सेवकों ने रमकुडी झमकुडी सहित सभी पशुओं को सजाया संवारा था लेकिन पशु उदास से लग रहे थे. कारण स्पष्ट था, एक सप्ताह से दा साहब के स्नेहमयी हाथों का स्पर्श उनकी देह से हो नहीं पाया था. कहां थे दा साहब? शायद यह प्रश्न उन पशुओं के मन में अवश्य रहा होगा।

हर दिन रमकुडी तबेले में जाने से पहले दा साहब के घर के आंगन से होकर गुजरती और ठिठक जाती थी. आंगन के आसपास दा साहब के घर का औसारा होता था, वहीं से पत्थर की खुली सीढ़ियां दा साहब की बैठक और उनके शयन कक्ष तक दूसरी मंजिल तक पहुंचती थी. वहीं से रमकुडी दा साहब की उपस्थिति या हलचल को महसूस करने की कोशिश करती थी. यह उसका दुर्भाग्य था कि अस्पताल में भरती दा साहब को वह कैसे महसूस कर पाती।

दीपावली की रात दा साहब को अस्पताल से छुट्टी मिली तो उन्हे घर ले आया गया. डॉक्टर ने अभी एक सप्ताह और आराम की सलाह दी थी. दा साहब भी अपने पशुओं, गायों विशेषकर रमकुड़ी झमकुडी की खैर खबर लेने को बैचेन थे।

गोरधन पूजा के दिन सुबह सुबह जब दा साहब की बहू उन्हें चाय देने गई तो दंग रह गई. दा साहब के पलंग के पास उनकी दुलारी रमकुडी आराम से बैठी थी और दा साहब उसकी गर्दन को अपने हाथों से सहला रहे थे. पिछली रात रमकुडी ने तबेले की ओर जाते हुए दा साहब की उपस्थिति को शायद उनकी खांसी की आवाज से महसूस कर लिया था और वह सीढ़ियां चढ़कर उनके पास पहुंच गई थी।

गोरधन पूजा के वक्त दा साहब ने गायों और बैलों की पूजा की, प्यार से उन्हें दुलारा तो गले में पड़ी सैकड़ों घंटियों की गूंज के साथ अनोखे प्रेम के दीप सबकी आंखों में झिलमिलाने लगे।

मोदी वर्सेस खानमार्केट गैंग

पुस्तक समीक्षा

शिवेश प्रताप

समीक्षक

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में लोकसभा चुनाव संपन्न हुए तथा तीसरी बार नरेंद्र मोदी ने देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लिया। इतनी लंबी चुनाव प्रक्रिया मैं जहां संपूर्ण विपक्ष एकजुट होकर नरेंद्र मोदी के खिलाफ संविधान बदल देने के नॉरेटिव को गढ़कर भी सत्ता को हथिया पाने में बुरी तरह असफल रही वहीं चुनाव के तुरंत बाद ओपन-एआई संस्था के द्वारा एक आधिकारिक बयान जारी किया गया कि भारत के लोकसभा चुनाव को इजरायल की कंपनियों के द्वारा बड़े स्तर पर नरेंद्र मोदी के विरुद्ध करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करते हुए सोशल मीडिया का दुरुपयोग किया गया।ऐसे में देश के ख्यातिलब्ध पत्रकार श्री अशोक श्रीवास्तव के द्वारा हाल ही में लिखी गई पुस्तक मोदी 1/ह्य खान मार्केट गैंग बेहद प्रासंगिक हो जाती है। प्रकाशित होते ही तेजी से चर्चा में आई इस पुस्तक का विमोचन बीते दिनों डॉ. सुधांशु त्रिवेदी जी द्वारा नई दिल्ली में किया गया।

इस पुस्तक में लेखक ने भारत की संप्रभुता एवं लोकतंत्र को अस्थिर करने के लिए भारत से लेकर वैश्विक स्तर तक फैले भारत विरोधी तत्वों द्वारा चलाए जा रहे नॉरेटिव की जंग के बारे में विस्तार से लिखा है। यह पुस्तक ऐसे लोगों का पर्दाफाश करती है जो अपने निजी एवं राजनीतिक स्वार्थ के कारण पेड वर्कर बनकर भारत के खिलाफ एक छद्म युद्ध लड़ रहे हैं। संभव है की इसी खतरे को भांपते हुए स्व. जनरल बिपिन रावत जी ने ढाई मोर्चे के युद्ध की तैयारी का आह्वान किया था। लेखक ने 25अध्यायों और 295 पन्नों की अपनी इस पुस्तक में खान मार्केट गैंग के षडयंत्रों का बड़ी बेवाकी व तर्कपूर्ण ढंग से पर्दाफाश किया है।

इस पुस्तक के प्रारंभिक अध्यायों में नई दिल्ली से न्यूयॉर्क तक फैले हुए इस खान मार्केट गैंग और उसके द्वारा 2024 के लोकसभा चुनाव को हाईजैक करने के क्रम में संविधान बदलने के नॉरेटिव को गढ़ते हुए गैंग का वर्तमान परिदृश्य बहुत बेहतर ढंग से पुस्तक के प्रारंभ में समझाया है। इससे पाठक देश के प्रधानमंत्री के विरुद्ध छेड़े गए इस नैरेटिव युद्ध को आसानी से समझकर पुस्तक से जुड़ जाता है।

पुस्तक में मोदी के खिलाफ़ लंबे समय से खान मार्केट गैंग के छुटभैया लुटियंस मीडिया द्वारा गढ़े जा रहे तानाशाह के नेरेटिव जो 2014 में प्रारंभ हुआ था उसकी 2024 तक की पूरी यात्रा का सिलसिलेवार वर्णन करते हैं। इंडी एलायंस के द्वारा देश के 14 चुनिंदा पत्रकारों को प्रतिबंधित और बहिष्कृत करने का कुचक्र कैसे इसी खान मार्केट गैंग के द्वारा 'नेमिंग एंड शेमिंग' करने हेतु रचा गया, यह घटना इतिहास के उस कालखंड से पाठकों को जोड़ती है जब सरदार पटेल को दूरदर्शन पर कम से कम दिखाने का षड्यंत्र रचा गया था और यह खबर समाचार पत्रों में छपी थी।

अशोक श्रीवास्तव जी ने एक अध्याय में मीडिया संस्थानों पर छापे और अभिव्यक्ति की आजादी पर होने वाले सिलसिलेवार हमले के बारे में

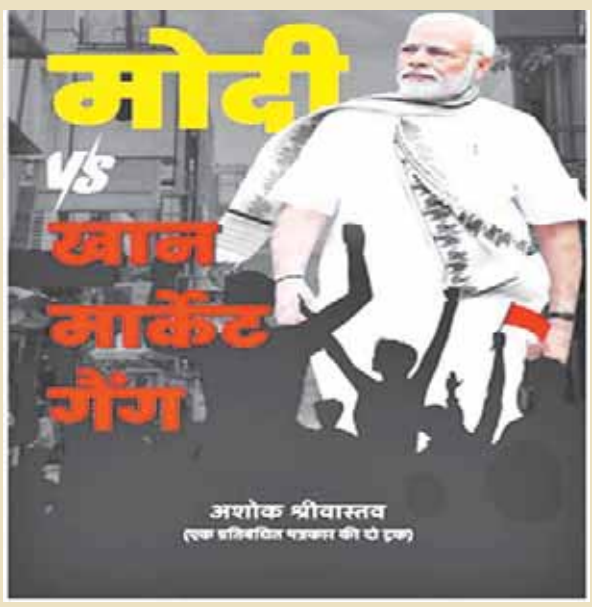

विस्तार से लिखते हुए बताते हैं कि कैसे दूरदर्शन को सुनियोजित तरीके से प्रभाव शून्य किया गया और अपने चुनिंदा मीडिया संस्थानों को आगे बढ़ाया गया और मालामाल किया गया। खान मार्केट गैंग को होने वाली विदेशी फंडिंग व मीडिया की आजादी के नाम पर फर्जी इंडेक्स दिखाकर भारत को बदनाम करने के षड्यंत्र के बारे में लेखक ने विस्तार से लिखा है जो देश के द्वारा पढ़ा जाना अत्यंत आवश्यक है।

2014 में नरेंद्र मोदी सरकार के केंद्र में आने के बाद जब खान मार्केट गैंग का लुटियंस से सरकार चलाना बंद हुआ तो बिलबिलाए और शक्तिहीन गैंग ने फैक्ट चेक के नए टूल के साथ इनफॉरमेशन वारफेयर के मोर्चे पर घुसपैठ करने लगे। यह पुस्तक बताती है की कैसे देशभर में मुसलमान को डराने और किसानों के नाम पर देश को तोड़ने के खालिस्तान आंदोलन को हवा देने के पीछे यह खान मार्केट गैंग कम कर रहा है। हाल ही में कंगना रनौत को थप्पड़ मरने वाली घटना के द्वारा इसी किसान आन्दोलन की आड़ में देश में पुनः अशांति फैलाने के कुचक्र इसी खान मार्किट गैंग के टूलकिट का अंग है जिसे परत दर परत इस किताब में उधेडा गया है।

देश के विकास, सेंट्रल विस्टा और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के बारे में भी नकारात्मक बातें कर देश के उत्साह को भंग किया जा रहा था। कैसे कश्मीर के मुद्दे पर देश की संप्रभुता पर आघात किया गया और भारत के जन मन में व्याप्त मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के बारे में नफरत फैलाते हुए मंदिर पर सियासत करने के लिए यह गैंग सक्रिय रहा इन सभी बातों को विस्तार से इस पुस्तक में बताया गया है।लेखक ने जॉर्ज सोरोज जैसे भारत विरोधियों, देश-विदेश के बिकाऊ मीडिया एवं फंडिंग पर पलने वाले पत्रकारों, एनजीओ गैंग के तीन तिगाड़ों को बाखूबी एक्सपोज किया है। फैक्ट और तथ्यों के साथ प्रस्तुतीकरण किताब को समृद्ध और सार्थक बनाती है। अशोक श्रीवास्तव जी ने इस पुस्तक हेतु मात्र लेखक का धर्म नहीं निभाया है अपितु अपने पत्रकारिता कौशल से सम्पूर्ण तथ्यों, बिंदुओं, घटनाओं सहित एक पूर्ण दस्तावेज के रूप में देश में हो रहे नरेटिव की जंग का साक्षीभाव से रिपोर्टिंग किया है। यह पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

पुस्तक-मोदी vs खान मार्केट गैंग
लेखक- अशोक श्रीवास्तव
प्रकाशक- काउंसिल फॉर मीडिया एंड पब्लिक पॉलिसी रिसर्च
मूल्य- 399.00/-

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

तमाम वादों से जूझती एवं प्रभावित होती कलाकृतियां

कला जब आधुनिकता की ओर बढ़ रही थी साहित्य के साथ ने उसे मजबूती प्रदान की। आंदोलन हमेशा सहयोग की माँग करता है, सहयोग की भावना यहाँ भी प्रबल थी। आधुनिक चित्रकला को तत्कालीन साहित्य से विलग नहीं माना जा सकता। कलाकार साहित्यकारों से तो साहित्यकार कलाकारों से प्रभावित नज़र आ रहे थे फलत- बदलाव होना ही था और हुआ भी। कलाकारों में स्व के बोध की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही थी। दर्शक के दर्शन और उनके प्रभाव से बेखबर वो अपने स्वतंत्र सृजन पर ध्यान देने में लगे थे। परिणाम से बेखबर बस काम में लगे रहे। राजा, समाज, समाज के लोग सब के सब अब बौने नजर आने लगे। डर नामक बिमारी को कलाकारों ने जीत लिया था। साहित्य एवं कला की भूमिका समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण है। बिना इसके समाज, समाज नहीं रह जाता या अधूरा ही रहता है। सृजन में पक्ष एवं विपक्ष दोनों होते हैं और मजबूती के साथ खड़े रहते हैं पर हमेशा मजबूत ही हों संशय है। शुरू में कलाएं सत्ता के दबाव में पलीं। पनपीं जरूर पर खुलकर खिल नहीं सकीं। तमाम वादों से भी प्रभावित रहीं। प्रमुख व्यक्तियों के शबीह चित्रों तक सिमट कर रह गई थी कला या फिर फूल-पत्ती, बाग-बगीचों, धर्म के इर्द-गिर्द घूमता रहा कलाकार। समय बीतता गया कलाकार की छटपटाहट ने उसे लगातार झकझोरना जारी रखा। अवस्था असहनीय स्तर तक पहुँच गई। इस बीच समकालीन साहित्य भी प्रभाववाद की बात कर रहा था। मामूली से मामूली विषय, प्रसंग को लेकर साहित्यकार विशेष लेखनशैली से उसको इतना महत्वपूर्ण बना दे रहे थे कि सौंदर्य शब्द-शब्द से झलक उठे। वर्णनात्मक शैली में विशेष लेखन साधारण से साधारण विषय को भी विशेष बना दे रहे थे। साधारणतः दिनचर्या भी लेखनीय जादू के सहारे पाठकों तक अच्छी पैठ बना पाने में सफलता हासिल करने लगी थी। सामान्य भी विशेष बन सकता है के सूत्र के सहारे प्रभाववाद अपने कदम बढ़ा रहा था, शायद यही समय की मांग भी थी। परिवर्तन लगभग रास आने लगी थी, दबी जुबान में ही सही आम पाठकों और दर्शकों के बीच इसकी चर्चा होने लगी थी जबकि अधिकतर आलोचकों का समर्थन उन्हें नहीं मिल रहा था। साहित्यकारों की भांति कलाकारों को भी साधारण से साधारण विषयों, बिखरी पड़ी हुई वस्तुओं, दीन-हीन, निरीह या थके-हारे मनुष्यों को विशेष तरीके से बनानें में आनंद आने लगा। वस्तु चित्रण, जीवन चित्रण सहित लगभग सभी चित्रों में प्रकाश के क्षणिक से क्षणिक पल पर भी काम होने लगा था। प्रकाश के बदलते अवस्था को फलक पर कैद कर लेने की होड़ सी मच गई थी। कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में जाकर विषय के सामने घंटों बैठकर सृजन करता था हालांकि उस पर यथार्थवादी तमगा भी लगाने का प्रयास हुआ पर अंतर स्पष्ट है जो पहले भी था कि यथार्थवादी कृतियों में रंग और रूप में परिवर्तन संभव नहीं था, नपा-तुला संयोजन, सधा हुआ तूलिका संचालन यथार्थवाद की पहचान रही है जबकि यहाँ विषय तो आम होता था पर प्रस्तुति आम नहीं थी। कलाकारों को वस्तु से ज्यादा उसपर तैरता प्रकाश प्रभावित कर रहा था जो वस्तु के रूप से ज्यादा सौंदर्ययुक्त परिवेश को दर्शा रहा था। प्रभाववाद आरोप-

प्रत्यारोप के भीषण दौर से गुजरते हुए तपे हुए सोने की भांति अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहा। दुनिया में साधारण कुछ भी नहीं है सब के सब विशेष हैं बस समय और सही कद्रदान सही समय पर मिल जाए। पास को खास नहीं मान सकने वाले पद्धति से बाहर आकर प्रभाववादी कलाकार अपने आस-पास को ही खास नज़र से देखने लगे। टूटी-फूटी, पुरानी बिखरी पड़ी वस्तु भी प्रकाश के प्रभाव से कितनी प्रभावी बन सकती है, प्रभाववादियों ने इसका भरसक भान कराया है। प्रभाववाद में इस पक्ष पर काफी काम हुआ है।

कह सकते हैं कि प्रकाश के विशेष प्रभाव के साथ यथार्थवादी कृतियाँ भी प्रभाववादी बन गईं। कहीं-कहीं यथार्थवाद के ही परिवर्तित रुप को प्रभाववाद माना गया है। बात अगर अंतर की हो तो नैसर्गिकता पर नैसर्गिक प्रकाश के प्रभाव के चलते कृतियों को प्रभावी बना देने के साथ ही उसके सौन्दर्य पक्ष को और अधिक प्रबल बना देना ही प्रभाववाद था। वही प्रभाववाद जिसमें कलाकार वैज्ञानिक तरीकों से कृतियों को परिवर्तित करने के प्रयास किए, वही प्रभाववाद जिसके बिना आधुनिक कला को समझ पाना मुश्किल है, जिसका प्रभाव ही रहा कि कलाकार खुल कर अपना आसमान तय करने लगे। वे सभी कलाकार जो आगे चलकर किसी न किसी वाद के जन्मदाता माने गए, खुद को प्रभाववाद से काफी हद तक प्रभावित मानते हैं। प्रभाववाद कई प्रयोगों हेतु जाना जाता है। माने, मोने, पिसारो, सिसली जैसे और कई महत्वपूर्ण कलाकारों के परिश्रम का ही फल प्रभाववाद है। 1863 का समय रहा जब लीक से हटकर काम करने वाले कलाकारों की कृतियाँ प्रर्दशनी हेतु अस्वीकृत कर दी गईं जबकि वे तमाम प्रयोगों और पूर्व के कई विशेष कलाकृतियों के अध्ययन के बल पर आधुनिक कला को मजबूती प्रदान करने हेतु मजबूत बुनियाद बनाने में जुटे हुए थे। कलाकृतियाँ प्रर्दशनी हेतु भेजी तो गईं पर चयन समिति में इस क्रांतिकारी परिवर्तन का कोई असर नहीं पड़ना था, समिति में परंपरागत विचारकों का बोलबाला था, उन्हें तो अपने पूर्व के बनें बनाए ढर्रे पर ही चलना था। परम्परागत मानकों को सम्हालना समिति के लोग खुद का उत्तरदायित्व समझते थे। ऐतिहासिक एवं धार्मिक वो भी बिल्कुल ही सावधानी पूर्वक बनाए गए कृतियों को चुनना उनका लक्ष्य था।

विरोधी विचारों के युद्ध में जीत सत्ताधारियों की हुई। उस वर्ष फ्रेंच राष्ट्रीय कला संस्थान द्वारा लगभग 4000 से भी अधिक चित्रों को अस्वीकृत कर दिया गया। एडवर्ड माने की कृति को दो वस्त्र युक्त पुरुषों के बीच बैठी एक निरावरण महिला के कारण अस्वीकृत होना पड़ा जबकि पूर्व में भी ऐसी कृतियाँ बनती रही थीं। अमान्य कृतियों को अमान्य कलाकारों ने आपस में ही खूब सराहा। कृतियों पर चर्चा का आयोजन भी किया गया जो प्रभाववाद के ही प्रभाव का प्रतिफल था।

अस्वीकृत कलाकारों में प्रर्दशनी को लेकर रोष साफ दिखने लगा था। जगह-जगह विरोध में प्रदर्शन होने लगे थे। सम्राट नेपोलियन तृतीय जिनकी रूचि भी परंपरागत ही थी, किन्तु विद्रोह जैसे घटनाओं में पारंगत मन में विचार आया कि क्यों न दर्शकों से ही निर्णय करवाया जाय। संवेदनशीलता प्रर्दशित करते हुए उन्होंने अस्वीकृत कृतियों की स्वतंत्र प्रर्दशनी लगाने का आदेश दिया। प्रर्दशनी %अस्वीकृत चित्रकारों की प्रर्दशनी% नाम से प्रसिद्ध हुई। वर्ष 1863 आधुनिक चित्रकला के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ उससे भी महत्वपूर्ण साबित हुआ नेपोलियन का निर्णय। कुछ चित्रकार अपनी कृतियाँ वापस ले गए जबकि अधिकतर चित्रकारों ने अपने कृतियों को प्रर्दशित करने का निर्णय लिया। कुछ कृतियों को छोड़ अधिकतर उपहास की पात्र बनीं किंतु नियमित दीर्घा की अपेक्षा भीड़ यहाँ ज्यादा रही। आगे चलकर आलोचक लुई के व्यंग्यात्मक लेख में क्लोद मोने के चित्र इंप्रेशन सनराइज हेतु प्रभाववाद शब्द का प्रयोग ही प्रभाववद नाम का कारण बना।

लघुकथा

गीली मिट्टी

अविनाश अग्निहोत्री

क्यों डुग्गू तुम्हारी मां तो कहती थी कि डुग्गू घर का एक काम नही करता। पर मैं तो जब से आई हूं,देख रही हूं। तुम तो घर के कोने कोने से बर्तन उठाकर झट किचन में रख आते हो।

अपनी मस्ती में काम करते डुग्गू को

रोककर दादी ने पूछा।तब वह बोला,दादी दादाजी इस बार अपने साथ कुछ बीज लाए है। जिन्हें हम अपने घर के गार्डन में रोपेंगे।

और दादाजी ने बताया है कि पर्यावरण में वृक्षों के साथ ही जल का भी बड़ा महत्व है। इसलिए गिलास आदि में उपयोग के बाद बचा हुआ पानी हम जमा कर रहे है। ताकि क्यारी की मिट्टी को गीला कर सके। दादाजी कहते है कि गीली मिट्टी में बीज का अंकुरण जल्दी होता है।

तब डुग्गू की पूरी बात सुन दादी उसके सर पर हाथ फेर उससे बोली। हां तेरे दादाजी ठीक ही कहते है,गीली मिट्टी में अंकुरण जल्दी होता है।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

भला कंक्रीट के जंगल में कोई कैसे सुकून से रह सकता ?

दूर दूर तक पृथ्वी का विस्तार दिखता था जहां तक आंख जाती वहां तक पृथ्वी ही दिखाई देती थी और इस पृथ्वी पर हरियाली , पेड़ , पहाड़ , नदियां , खेत खलिहान और बड़े बड़े पेड़ दिखलाई देते थे । जब बस या ट्रेन से चलते तो ये सबकुछ एक साथ मिलकर बहुत सुंदर कोलाज बनता था , सारे पेड़ खेत खलिहान नाचते भागते हुए पीछे छुटते जाते थे और आज स्थितियां बहुत बदल गयी हैं अब आप अपने पीछे छोड़ते हैं तो केवल कंक्रीट के जंगल छुटते जाते हैं आप अपने पीछे फ्लाईओवर छोड़ते हैं, बड़े बड़े मल्टी स्टोरी विल्डिंग को छोड़कर हम आगे बढ़ते जाते हैं , हरियाली और खेत व पहाड़ अपनी दृश्यता में कम से कमतर होते जा रहे हैं जो आज के संकट के बड़े कारक हैं । अब हर कोण पर कंक्रीट ही तो दिखता है, सड़क कंक्रीट का , घर कंक्रीट का सारे स्थापत्य कंक्रीट का और इन सबके निर्माण में न जाने कितना कुछ खत्म होता जाता है कि आंखें जो कुछ देखने की आदी रही हैं वह तो अब दिखता ही नहीं। यदि कुछ इलाकों में पुराने पेड़ दिखते हैं तो यह आपकी खुशनसीबी है, पहाड़ नदियां और पेड़ बड़ी बड़ी झीलें यदि है तो वह आपके लिए समृद्धि का कारक बनेगी । इनके किनारे ही जीवंतता, खुशहाली और वह सुकून मिलेगा जिसके लिए जीवन होता है । आज हो क्या रहा है कि जीवन स्थितियों पर विचार करने की जगह, जीवन शैली पर सोचने की जगह कितना कुछ बटोर लें, धन की ढ़ेर पर बैठ जाएं तो इससे भला खुशी कहां मिलेगी पर सब बटोर रहे हैं, भाग रहे हैं धन की ओर और इस क्रम में सुख चैन गंवाकर पड़े हैं हजारों तरह की व्याधियों के बीच...जब ये स्थिति आ जाती है कि इस धन को न खा सकते न पी सकते तब कहेंगे कि हमने साहब बड़ी भारी गलती की स्वास्थ्य की कीमत पर धन कमाया अब इस धन दौलत का कोई उपयोग नहीं है पर यह बात बहुत देर से समझते हैं जिसका कोई अर्थ नहीं होता । जब तक आप इस पृथ्वी पर हैं तब तक अपनी परिधि का विस्तार करते चलें, अपने आसपास की धरती को जतन करने की कोशिश करें, अपने आसपास खुशियों की खुशहाली वाली दुनिया बनाने की कोशिश करें जितना कुछ स्वयं के लिए करते चलते हैं उसी तरह कुछ कुछ अन्य के लिए भी करते चलते तो बहुत बड़ा सामाजिक हस्तक्षेप होता आपकी उपस्थिति का सामाजिक अर्थ होता और इस क्रम में एक संतुलित समाज जीवन का सहज व्यवहार सामने आता।

पहले हमारे आसपास इफरात भूमि होती थी , चारों तरफ माटी का विस्तार दिखता था । पृथ्वी का वैभव उसकी माटी से ही है माटी पर ही धरती लहलहाती दिखती है जहां माटी

नहीं है वहां कुछ नहीं है । खेत खलिहान धीरे धीरे बीते दिनों की बात होते जा रहे हैं । जहां बाग थे वहां अब कई कई मंजिलें मकान खड़े हो गए । हरियाली दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है । अब लोगों के घरों पर पेड़ नहीं दिखते उसकी जगह पर सुंदर सुंदर गमले दिखते हैं और उसमें बोनसाई पौधे । यह गमला संस्कृति एक सीमा तक ठीक है लेकिन सब कुछ यहीं नहीं है । यदि आपके पास जमीन है तो पेड़ जरूर लगाएं । खेत के किनारे किनारे रास्ते पर, सड़क किनारे, पार्क में, खाली जमीन पर पेड़ लगाए । बड़े पेड़ लगाते चलें जैसे पीपल, वरगद, गूलर , पाकड़, नीम , आम, शीशम, जामुन , कटहल , बड़हल महुआ, आंवला, शिरीष, चरैल यानी छायादार और फलदार पेड़ लगाते हुए चलें । ये पेड़ ही हैं जो हवा फल और जीवन में रस का संचार करते हैं । इन्हीं के आसपास बैठकर मानव ने सभ्यता की विकास यात्रा की गाथा लिखी ।

आज स्थितियां एकदम से अलग होती जा रही हैं, हम सब आधुनिकता के दबाव में प्रकृति की सत्ता को भूलकर आगे बढ़ते जा रहे हैं । पर यहीं यह बात भी ध्यान रखने की है कि हमारा जो भी अस्तित्व है वह प्रकृति के साहचर्य में ही संभव है प्रकृति से जब दूर होते हैं तो फिर जीवन स्थितियां संभल नहीं पाती । आदमी यूं ही भटकता हुआ दिखता है । पृथ्वी के पास सबकी जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधन है पर यह संसाधन सीमित है इसे हम केवल अपने लिए या अपने लालच के लिए उपयोग नहीं कर सकते न ही यह केवल हमारे लिए है । प्रकृति की सत्ता हर पीढ़ी के लिए होती है यह केवल इस पीढ़ी के दोहन के लिए नहीं है । प्रकृति का हम संरक्षण करते चलें तब तो ठीक है अन्यथा प्रकृति तो अपने हिसाब से बदला लेती रहती है । इस सत्य को हम सब संसार भर में देख रहे हैं आज जो चारों तरफ गर्मी का हाहाकार मचा है वह सब इसी का परिणाम है । यदि आज हम अपनी दुनिया को रहने लायक बनाना चाहते हैं तो तो हमें अपनी प्रकृति की रक्षा के लिए आगे आना ही होगा । यह सारा दायित्व मनुष्य के उपर ही है क्योंकि वही सबसे ज्यादा प्रकृति का उपभोग करता है और वही प्रकृति का दोहन भी करता है इसलिए प्रकृति के संरक्षण हेतु नैतिक रूप से मनुष्य की ही जिम्मेदारी बनती है ।

पृथ्वी पर जो संकट आज दिख रहा है वह अचानक नहीं आया है। हम सभी के लालच का परिणाम दिख रहा है। सब कुछ नष्ट कर हम खुशियां ढूंढने चलेंगे तो कहां से मिलेगी ? गांव पर जो जमीन है उसे बेच बेच कर शहर में सब बस जाने की तैयारी में हैं आज नारे शहर भी अतिरिक्त भार को ढ़ो रहे हैं यह बात बड़े शहरों की नहीं है बल्कि छोटे और मध्यम वर्ग के शहर भी नागरिक सुविधाओं को जुटाने में परेशान नजर आ रहे हैं क्योंकि संसाधन कम पड़ते जा रहे हैं । इसके लिए कोई एक नहीं सब जिम्मेदार हैं ।

सारा संकट ही यही से शुरु होता है कि हम क्या पा लें ? एक क्षण के लिए भी धैर्य नहीं है। यह हाहाकारी भागदौड़ इस तरह लाचार और पंगु बना देती है जैसे कि गर्मी ने इन दिनों में किया है । यह सब कुछ लगातार हो रही लापरवाही का परिणाम है । दिन प्रतिदिन माटी कम होती जा रही है और उसकी जगह कंक्रीट लेती जा रही है । यह जो माटी का विस्थापन हो रहा है वह न केवल हमारी सेहत के लिए ख़तरनाक है बल्कि सभ्यता के सामने भी बड़ा संकट खड़ा है । हमें अपनी जड़ों की ओर , अपनी प्रकृति की ओर और माटी की ओर जाने की जरूरत है । यदि हमारे आसपास प्रकृति है, माटी है , माटी का रूप जमीन है तो तय मानिए कि हमारे पास हरियाली भी होगी ।कंक्रीट पर कुछ नहीं उगता और हम आज बस यही कर रहे हैं कि जहां भी खाली जगह दिख रही है उस पर कंक्रीट खड़ा करते जा रहे हैं । यह कंक्रीट ही आज तप रहा है । तापमान पूरी पृथ्वी का बढ़ता जा रहा है क्योंकि हमारे चारों तरफ बस कंक्रीट के पहाड़ उग रहे हैं और वास्तविक पहाड़, वास्तविक जंगल दिन प्रतिदिन खत्म होते जा रहे हैं । ऐसे में भला कंक्रीट के जंगल में कैसे आदमी सुकून से रह सकता है। अब तो हर जगह बस कंक्रीट ही कंक्रीट दिखाई दे रहा है । पुरानी स्थितियां, पुराने पेड़ और खेत खलिहान नदी तालाब सभी तो अपना स्वरूप खोते जा रहे हैं फिर भला हम सब कैसे अपने आप को सुरक्षित रखेंगे ।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

लव की अरैंज मैरिज़, बड़ी अपेक्षाओं के साथ रिलीज़

इस साल की बहुप्रतीक्षित पारिवारिक मनोरंजन फिल्म - ' लव की अरेंज मैरिज ' अंततः ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज़ हो गई है । एक्ट्रेस अवनीत कौर के थोकबंद फैन फालोअर्स में इस फिल्म को लेकर भारी उत्साह देखने को मिल रहा है।'लव की अरेंज मैरिज' में अवनीत कौर के अलावा सनी सिंह, अन्नू कपूर, सुप्रिया पाठक और राजपाल यादव जैसे स्थापित कलाकारों के होने से इस फिल्म से बड़ी अपेक्षा की जा रही है ।कहा तो यह भी जा रहा है कि - ' हम आपके है कौन ' और ' हम साथ-साथ हैं ' जैसी फिल्मों के प्रशंसक इस फिल्म में भी उसी सौ-फीसदी मनोरंजन की तलाश करें तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। यह फिल्म भी उसी परम्परा की मजेदार फिल्म है । इस फिल्म में अन्नू कपूर एक बार फिर से एक ऐसे पिता की भूमिका में नजर आये हैं, जो बेटे की शादी के उम्र में अपने लिए दुल्हन ढूँढ रहे है। यह कथ्य ही मजेदार दृष्यबन्ध का प्रमाण है । निर्देशक इशरत आर. खान की इस फिल्म का उद्देश्य दर्शकों को हँसी और रोमांस के एक रोमानी सफर पर ले जाना है, जहाँ चरित्रोके साथ काफी कुछ ऐसा घटित होता है जिसे असाधारण कहा जा सकता है । फिल्म की कहानी का हर मोड़ आपको ठहाके लगाने को मज़बूरर करेगा । प्रतिभाशाली अभिनेता अन्नू कपूर , सुप्रिया पाठक और राजपाल यादव अभिनीत इस फिल्म में सनी सिंह और अवनीत कौर भी हैं । यह दो जोड़ों की परस्पर जुड़ी प्रेम कहानियों में डूबी हुई है, जो दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करती है। सनी और अवनीत की मुख्य जोड़ी लव और इशिका की भूमिका में हैं। वे अपनी भूमिकाओं में ताजगी का संचार करते हैं, हालांकि अराजकता के बीच कभी-कभी उनकी रिश्तों की केमिस्ट्री पीछे छूट जाती है मगर निर्देशक उसे सम्हाल लेता है ।

फिल्म की शुरुआत एक पारम्परिक अरेंज मैरिज के लिये जुटाये गये तामझाम से होती है । इस एक हैप्पी -हैप्पी सेट पर लड़की की माँ की भूमिका में सुप्रिया पाठक नज़र आती हैं जो अपनी बेटी की शादी करवाना चाहती हैं, लेकिन बेटी की भूमिका निभा रही अवनीत कौर को शादी नहीं करनी है। कुछ इस लाईन पर फिल्म की कहानी आगे बढ़ती है और एकाधिक रोचक मोड़ के साथ सुखद अंत तक पहुँचती है ।अभिनय की दृष्टि से इस फिल्म में सब एक दूसरे बढ़कर हैं । अन्नू कपूर ने शराबी पिता की भूमिका

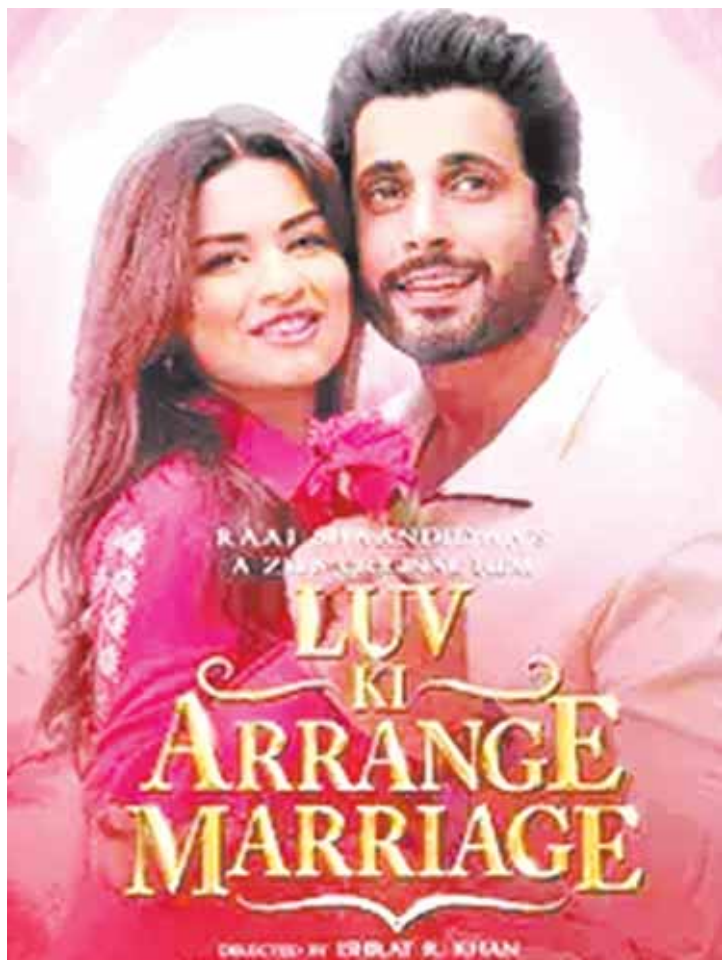

में अपना ट्रेडमार्क हास्य पेश करते हुए अपनी उपस्थिति को दर्शाया है । वे इस भूमिका में उन परिस्थितियों की बेतुकी बातों को सामने लाते है जिसका सामना वह अपने बेटे के साथ प्यार में पड़ने के दौरान करते हैं । बेटे की भूमिका - ' प्यार का पंचनामा ' से अपनी पहचान बनाने वाले सनी सिंह ने निभाई है। सुप्रिया पाठक ने हमेशा की तरह अवनीत कौर की माँ के रूप में दमदार? अभिनय किया है, जिससे इस भूमिका में गहराई और आकर्षण आ गया है।इस बीच, राजपाल यादव का प्रेम-प्रेरित चरित्र कहानी में हास्य और उलझन का एक और आयाम जोड़ता है। लेकिन सुप्रिया की भूमिका के साथ उनके कुछ पल थोड़े अजीब लगते हैं। फिल्म का लेखन और निर्देशन इशरत आर. खान का है और वे अपने काम को वे बड़ी कुशलता से निभा ले गये हैं । राज शांडिल्य की पटकथा भी हास्य और रोमांस से भरी कहानी के हिसाब से एकदम सही है फिर भी कई बार लगता है कथानक को हिन्दी टीवी धारावाहिक तारक मेहता का उल्टा चश्मा के माफिक खींचा जा रहा है । इससे फिल्म मैं कुछ ऐसे क्षण आते हैं जो प्रभावहीन लगते हैं। फिर भी, फ़िल्म अपने मज़ेदार संवादों और परिस्थितिजन्य कॉमेडी से दर्शकों को बाँधे रखने में सफल रहती है। वैसे अनुभवी अभिनेता कमज़ोर लेखन का भार अपने कंधों पर उठाते हैं इससे निर्वाह हो गया । यह फिल्म प्यार और रिश्तों पर एक हल्का-फुल्का नज़रिया पेश करती है। अपनी खामियों के बावजूद, यह कुछ हँसी और दिल को छू लेने वाले पल पेश करती है, जो इसे राजपाल यादव और सुप्रिया पाठक के प्रशंसकों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाती है।

इशरत खान निर्देशित इस फिल्म में गहराई की कमी है। इसमें बहुत कुछ हो रहा है और यह सब बहुत ही विचित्र भी है। साथ ही फिल्म के लेखक खान स्क्रिप्ट को कुछ दिलचस्प बना सकते थे, लेकिन लव की अरेंज मैरिज अस्सी के दशक के आखिर की फिल्मों में से एक बन गई, जिसमें एक दुखद कहानी थी और पारिवारिक ड्रामा चरम पर था। भले ही उन्होंने सूरज बड़जात्या की फिल्मों से एक अध्याय लिया हो, लेकिन पढ़ने के लिए कुछ भी नया नहीं है। इस फिल्म की कहानी को मध्य प्रदेश के खूबसूरत मन्दिरों और सुरम्य प्राकृतिक दृष्यों के शहर ओरछा में फिल्माया है और फिल्म तभी अच्छी लगती है जब कैमरा कभी-कभी बाहरी दृश्यों पर भी जाता है।यह सब्सिडी का लालच ही होगा जिसके कारण ऐसी फिल्मों की शूटिंग छोटे शहरों में की जाती है, लेकिन वास्तव में, इस तरह की फिल्म से उस जगह का नाम खराब होता है।

डीआरसीसी की बैठक में उठा स्टेशन पर धीमे निर्माण कार्य का मुद्दा

बैतूल। मंडल रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति (डीआरसीसी) की बैठक नागपुर में आयोजित हुई। इस बैठक में सदस्य दीपक सलूजा ने अमृत भारत रेलवे स्टेशन योजना के तहत बैतूल रेलवे स्टेशन पर धीमी गति से हो रहे कार्यों पर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने समिति से इस पर स्पष्टीकरण मांगा और विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान आकर्षित किया।

इसके साथ ही उन्होंने बैतूल से सभी मेमू ट्रेनों के परिचालन की मांग की। बैतूल स्टेशन पर सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन लगाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उल्लेखनीय है कि नागपुर में आयोजित मंडल रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति की 163वीं बैठक में बैतूल के सदस्य दीपक सलूजा और सीताराम महाते ने भाग लिया। बैठक का शुभारंभ डीआरएम मनीष अग्रवाल और सीनियर डीसीएम अमन मित्तल द्वारा किया गया।

नवागत डीआरएम ने प्राप्त किया परिचय- नवागत डीआरएम के पदभार ग्रहण करने के बाद यह उनकी पहली बैठक थी। शुरुआत में डीआरएम श्री अग्रवाल ने सभी सदस्यों का परिचय लिया और यात्री सुविधाओं में वृद्धि के लिए उनके सुझावों को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि सदस्यों के सुझावों से रेलवे सुविधाओं में वृद्धि होती है। सीनियर डीसीएम अमन मित्तल ने भविष्य की योजनाओं और सुविधाओं पर एक पावर प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया, जिसमें बैतूल को विशेष तवज्जो दी गई।

इन मुद्दों पर भी ध्यान आकर्षण- दीपक सलूजा ने सदर अंडर ब्रिज के कार्य की स्थिति के बारे में जानकारी मांगी। रेलवे इंजीनियरिंग विभाग ने उन्हें बताया कि यह कार्य अभी रेलवे बोर्ड में शॉर्ट लिस्टिंग हेतु लंबित है और स्वीकृति के बाद ही प्रारंभ किया जाएगा। उन्होंने वंदे भारत ट्रेन के प्लेटफॉर्म पर अंतिम छोर पर रुकने से बुजुर्ग यात्रियों को होने वाली कठिनाइयों का मुद्दा भी उठाया।

अभी तक 40 फीसद काम पूरा- रेलवे परिचालन विभाग ने बताया कि भारतीय रेलवे में सभी मेल एक्सप्रेस गाड़ियों को प्लेटफार्म के अंतिम स्थान पर रोकने की व्यवस्था है, जिससे अन्य यात्रियों की सुविधा सुनिश्चित हो सके। श्री सलूजा को गति शक्ति विभाग ने यह स्पष्टीकरण दिया कि वर्तमान में बैतूल रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत योजना के तहत विभिन्न कार्य 40 प्रतिशत तक पूर्ण हो चुके हैं, जिनमें ड्रेन बनाना, टॉयलेट सुदृढ़ीकरण और नए रेलवे आवास निर्माण शामिल हैं। शेष कार्य प्रगति पर हैं।

भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श- सीनियर डीसीएम द्वारा प्रस्तुत पॉवर प्रेजेंटेशन में बैतूल स्टेशन के कायाकल्प की योजनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। बैतूल स्टेशन के महिला प्रतीक्षालय में सेनेटरी वेंडिंग नैपकिन मशीन तकनीकी खराबी के कारण बंद है, जिसे जल्द ही ठीक किया जाए। इसके साथ ही दीपक सलूजा ने यात्रियों की सुविधा हेतु अन्य महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। श्री सलूजा के लिखित सुझावों पर बिंदुवार चर्चा हुई और संबंधित अधिकारियों ने अपने जवाब दिए। बैठक के अंत में सभी सदस्यों ने छह माह का अतिरिक्त कार्यकाल बढ़ाने के लिए डीआरएम का आभार व्यक्त किया।

सुझावों को लागू करने उठाएंगे कदम- सभी सदस्यों ने यात्री सुविधाओं में वृद्धि और रेलवे की छवि को सुधारने के लिए अपने सुझाव दिए, जिन पर आगे की कार्यवाही की जाएगी। बैठक में यात्री सुविधाओं की वृद्धि और भविष्य की योजनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई। डीआरएम ने सदस्यों के सुझावों को महत्वपूर्ण मानते हुए उन्हें लागू करने की दिशा में कदम उठाए जाने के लिए आश्वस्त किया, जिससे यात्रियों की सुविधा और रेलवे की छवि में सुधार होगा।

ब्लाक कांग्रेस के तत्वावधान में नीट व यू.जी.सी. पेपर लीक के मामले में राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा

सुबह सवेरे सोहागपुर। आज ब्लाक कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में नीट, यूजीसी पेपर लीक मामले में राष्ट्रपति को संबोधित करते ज्ञापन एवं गोड़ी खेरी जल में अतिक्रमण को लेकर जिला कलेक्टर के नाम अनुविभागीय अधिकारी बृजेंद्र रावत को ज्ञापन सौंपे गए। ज्ञापन में कहा गया है कि निरंतर केन्द्र

सरकार द्वारा संचालित परीक्षाओं में पेपर लीक हो रहे हैं। इससे देश के बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ किया जा रहा है । जिससे देश के भावी भविष्य को बर्बाद हो रहा है। ज्ञापन में सरकार को बर्खास्त करने एवं दोषी अधिकारियों बच्चों के भविष्य को बर्बाद करने के कारण देशद्रोह का मुकदमा चलाने की मांग की गई है। इसी क्रम में ब्लाक कांग्रेस कमेटी ने गोड़ीखेरी जलाशय के पास हो रहे अतिक्रमण करके स्टाप डेम निर्माण किया जा रहा है। इससे ग्रामीणों को पानी मिलने में दिक्कत होगी। इस अवसर पर पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह पटैल, ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष आलोक जायसवाल, वकील मंगलसिंह रघुवंशी, नीरज चौधरी, मुबीन खान, पूर्व पार्षद मोहन कहार, पार्षद जमील खान, वकील कार्तिक शर्मा, प्रकाश मालवीय सहित कई कांग्रेसी नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बच्चों के लिए 4 दिन का निःशुल्क एक्टिविटी केम्प आयोजित

महावीर इंटरनेशनल संकल्प ने किया आयोजन

बैतूल। महावीर इंटरनेशनल संकल्प बैतूल ने अमिझरा पार्श्वनाथ मंदिर परिसर गंज में बच्चों के लिए 4 दिन का निशुल्क एक्टिविटी केम्प का आयोजन 18 जून से 21 जून 2024 तक किया। जिसमें लगभग 50 बच्चों ने भाग लिया। श्रीमती चंदन शाह ने बहुत ही रोचक तरीके से योग और

प्राणायाम सिखाया। श्रीमती सलोनिका अग्रवाल ने गुड टच व बेड टच और अपनी अच्छाइयों और कमजोरियों को जानने और उनको दूर करने के बारे मे जानकारी दी। श्रीमती डॉ नमिता लश्करे ने अच्छे हाइजीन की जरूरत और उपायों के बारे में समझाया। वीरा मीनाक्षी लुहाडिया ने कार्ड से एनवलप डेकोरेशन व वीरा शर्मिला पारख राजुल, सुनीता, रेखा ने सादा टांका व बटन लगाना, वीरा नीता खंडेलवाल व वीरा करूणा गर्ग ने पेपर बाल बनाना, डेकोरेशन व पौधरोपण का महत्व समझाकर सभी बच्चों से पौधे लगवाए। वीरा नीता खंडेलवाल एवं करुणा गर्ग ने कैंप का सुंदर संचालन किया।महावीर इंटरनेशनल के सदस्य वीरा सरला शांतिलाल तांतेड, वीरा पूनम मेहता,वीरा जूली रांका, वीरा प्रतिभा लुहाडिया, वीरा राजुल शाह, वीरा नूतन लुहाडिया, वीरा नीता खण्डेलवाल, वीरा करूणा गर्ग,वीरा पिंकी पगारिया, वीरा सपना पगारिया ,वीरा मेघा माहेश्वरी, वीरा रेखा गुगनानी, वीरा सुनीता गुगनानी, वीरा मीनाक्षी लुहाडिया, वीरा श्रुति रांका, वीरा वंदना पगारिया, वीरा शर्मिला पारख आदि उपस्थित थे।

केंद्र की टीम द्वारा विकासखंड सरदारपुर के आयुष्मान आरोग्य मंदिर बोला में किया गया गुणवत्ता मूल्यांकन

धार। दिल्ली और आंध्र प्रदेश के सदस्यों से मिलकर बनी केंद्र सरकारी टीम द्वारा विकासखंड सरदारपुर के आयुष्मान आरोग्य मंदिर बोला में गुणवत्ता मूल्यांकन किया गया। टीम द्वारा राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों के अनुसार इस मूल्यांकन को संपन्न किया गया। यह मूल्यांकन जिले के 30 विभिन्न आयुष्मान आरोग्य मंदिरों की आगामी श्रृंखला का पहला मूल्यांकन था। इसके पश्चात 24 जून को गंधवानी विकासखंड के मोहनपुरा आयुष्मान आरोग्य मंदिर और 25 जून को नालछा विकासखंड के बाछनपुर आयुष्मान आरोग्य मंदिर का मूल्यांकन किया जाएगा। यह मूल्यांकन श्रृंखला स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने और सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल चिकित्सा सेवाओं का स्तर बेहतर होगा, बल्कि आम जनता को भी उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त होंगी। जिला स्तर से मुख्य चिकित्सा एवम स्वास्थ अधिकारी के निर्देशन पर जिला कार्यक्रम प्रबंधक, जिला क्वालिटी मॉनिटर ,सीपीएचसी कंसल्टेंट, जिला कम्युनिटी मोबिलाइजर द्वारा आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का निरंतर भ्रमण कर तैयारिया करवाई गई। विकासखण्ड स्तर से मुख्य खंड चिकित्सा अधिकारी , विकासखण्ड कार्यक्रम प्रबंधक द्वारा बोला सेंटर पर आवश्यक निर्देश देते हुए तैयारिया करवाई गई। केंद्रीय टीम द्वारा सेंटर पर समस्त कर्मचारियों और ग्रामीणों से यहां मिलने वाली सुविधाओं के सम्बंध में जानकारियां ली गई।

सवारी बैठाने पर दी जा रही धमकी

ई रिक्शा चालकों ने प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। ई रिक्शा चालकों ने प्रशासन को एक ज्ञापन सौंपकर सुरक्षा दिलाए जाने की मांग की है। ज्ञापन में ई रिक्शा चालक संघ ने प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर उल्लेख किया है कि उन्हें शहर के विभिन्न चौक-चौराहों से डीजल ऑटो के चालकों द्वारा सवारी नहीं बैठाने दी जाती है। यदि वह सवारी बैठाते हैं तो उन्हें मारने-पीटने और गाड़ी तोडने की धमकी दी जाती है। उन्होंने कहा कि उन्हें कोतवाली चौक, बाबू चौक, कालेज चौक, हास्पिटल चौक सहित शहर के अन्य चौक-चौराहों से सवारी बैठाने के लिए सुरक्षा प्रदान की जाए। ज्ञापन सौंपने के दौरान देवेंद्र गिरी, रमेश शेषकर सहित अन्य ई रिक्शा चालक मौजूद थे।

7 साल से नहीं है जिले के एकमात्र उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक, इस सत्र में एक भी छात्र ने नहीं लिया एडमिशन

बैतूल/मुलताई। मुलताई के नाका नंबर एक पर स्थित जिले का एकमात्र उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक नहीं है जिसके कारण इस सत्र में कक्षा पहली में एक भी एडमिशन नहीं हुए है जिसको लेकर पलकों में भारी रोष है। पालको का कहना है कि स्कूल में पिछले कई वर्षो से उर्दू विषय पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं है। ऐसे में पालक बिना शिक्षक के अपने बच्चो का हिंदी उर्दू स्कूल में दाखिल नहीं कराना चाहते।स्कूल चले हम अभियान के तहत आज उर्दू हिंदी स्कूल में हाजी शमीम खान एवं भाजपा अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के जिला कोषाध्यक्ष जाफर पटेल के मुख्य अतिथि में प्रवेश उत्सव कार्यक्रम हुआ जब पालको ने उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक की नियुक्ति नहीं होने की जानकारी मुख्य अतिथियों को दी तो जाफर पटेल ने फोन पर इस समस्या से विधायक चंद्रशेखर देशमुख को अवगत कराया। विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने तत्काल फोन पर ब्लॉक शिक्षा अधिकारी से शिक्षक नियुक्ति के संबंध में चर्चा की और इस समस्या के समाधान के लिए हर संभव प्रयास किए जाने का आश्वासन दिया।

2017 के बाद से नहीं है, उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक- बुधवार को आयोजित स्कूल चले हम अभियान के अंतर्गत अतिथियों द्वारा हिंदी उर्दू स्कूल में स्कूली बच्चों को किताबो का वितरण भी किया। जिसके बाद स्कूल के एसएमसी अध्यक्ष अजीजुर रहमान खान, पालक साजेदा बेगम, शाहिदा बी, शकीला आदि में स्कूल में उर्दू शिक्षक नहीं होने की जानकारी दी। उन्होंने बताया की 2017 के बाद से स्कूल में स्थाई तौर पर उर्दू शिक्षक नहीं है। पालकों की मांग और दो वर्षो के लिए एक शिक्षक को अटैच किया गया था। वहीं पिछले सत्र ने भी पालकों ने जमकर हंगामा किया था, जिसके बाद आनन फानन में अस्थाई शिक्षक की व्यवस्था की गई थी।

विधायक ने की बीईओ से फोन पर चर्चा- पालकों की बात सुनकर प्रेरक तत्काल बीईओ कार्यालय पहुंचे और उनसे चर्चा की विधायक देशमुख ने बीईओ से फोन पर इस संबध में चर्चा की उन्होंने जल्द से जल्द उर्दू शिक्षक की नियुक्ति के लिए हर संभव प्रयास करने का आश्वासन दिया। वहीं जाफर पटेल द्वारा स्कूली गरीब बच्चों को स्कूल ड्रेस के लिए आर्थिक मदद दी। इस अवसर पर स्कूल की प्रभारी प्रधान पाठिका वर्षा खेरे, शिक्षक दिनेश नागले, पुष्पा रघुवंशी, सोलत जहां सहित स्कूली बच्चे उपस्थित रहे।

इनका कहना

उर्दू स्कूल में उर्दू शिक्षक की नियुक्ति को लेकर डीओ ने भी 6 माह पूर्व प्रतिवेदन आगे बढ़ाया है। आज विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने भी चर्चा की है शीघ्र ही उर्दू शिक्षक की पदस्थापना होगी।

-आशीषचंद्र शर्मा,
बी.आर.सी., मुलताई

अच्छी वर्षा के लिए आहू पार्श्वनाथ को 108 अर्घ समर्पित किए

धार। शहर के समीप प्राचीन अतिशय क्षेत्र श्री आहू पार्श्वनाथ पर शुक्रवार को ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा पर भक्तों का जनसैलाब दर्शन के लिए सुबह से शाम तक उमड़ पड़ा प्रातः काल सर्वार्थ सिद्धि योग के अंतर्गत अच्छी वर्षा के साथ विश्व शांति और मानव कल्याण की भावनाओं को लेकर भगवान के मस्तक पर महा

शांति धारा की गई जिसका लाभ अमरकोट राजस्थान के शिखर चंद जैन परिवार व इंदौर के राजकुमार जैन व पारस जैन को मिला। उसके बाद संकट हरण मनोकामना पूर्ण पार्श्वनाथ मंडल विधान कर 108 अर्घ विशेष मंत्रो के साथ भगवान पार्श्वनाथ को चढ़ाए जिसका लाभ चंदा जैन पापलिया व पार्श्वनाथ परिवार के 348 आजीवन सदस्यों को मिला। इस अवसर पर हवन भी संपन्न हुआ भगवान पार्श्वनाथ की महा आरती का लाभ गंधवानी की श्रीमती लीलावती काला को मिला रात्रि में भक्तामर जी का पाठ व आरती संपन्न हुई संपूर्ण धार्मिक क्रियाएं पंडित आशीष जैन ने कराई । यात्रियों का बहुमान समिति के अध्यक्ष पवन जैन गंगवाल ने किया सुरेंद्र हेमंत जैन का सहयोग रहा। जानकारी पारस जैन गंगवाल ने दी।

शहर में बारिश का करोड़ों लीटर धरती में उतारने की कोशिशें तेज़/ भूजल बढ़ाने का संदेश देते शहर में निकलेगी सायकिल रैली

देवास/मोहन वर्मा। जिला प्रशासन, नगर निगम और शहर की सामाजिक संस्थाओं के इस सामूहिक अभियान में शहर के मकानों, उद्योगों, स्कूल, अस्पतालों, सरकारी और गैर सरकारी प्रतिष्ठानों की छतों से हर बारिश में बह जाने वाले करोड़ों लीटर पानी को सहेज कर धरती में उतारने के लिए अमृत संचय अभियान की टीम जी तोड़ कोशिशों में जुटी है।

सोमवार की शाम 5 बजे स्थानीय जवाहर चौक से पर्यावरण तथा पानी बचाने का संदेश देती एक बड़ी साइकिल रैली निकाली जाएगी। रैली को ष्टश्वह्व जिला पंचायत,ष्ठरूऔर जॉइंट कलेक्टर हरि झंडी दिखाकर शुरू करेंगे इसमें जनप्रतिनिधियों के साथ जिले के प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। रैली विभिन्न मार्गों से होते हुए पायोनियर पब्लिक स्कूल मुखर्जी नगर पहुँचेगी, जहाँ समारोह के रूप में बारिश के पानी को थामने की ज़रूरत तथा तकनीकों पर बात की जाएगी। समापन अवसर पर महापौर, निगम अध्यक्ष, कलेक्टर सहित सभी प्रशासनिक अधिकारी, देवास शहर और क्षेत्र के अनेक गणमान्य जन की मौजूदगी में अमृत संचय अभियान की जानकारी और इसे सहेजने के बारे में बात करेंगे। अब तक कई लोगों ने अपने घरों, प्रतिष्ठानों पर रूफ़ वाटर हार्वेस्टिंग, रिचार्ज पिट, वेल रिचार्ज आदि तकनीकों के ज़रिए इस बारिश के मौसम का पानी बचाने का संकल्प लिया है। अभियान की टीम ने अधिक से अधिक शामिल होकर इसे सफल बनाने की अपील की हैं।

धार शहर में शनिवार को तेज बारिश से मौसम खुशनुमा हो गया। वही आम जन बदरा के बरसने से खुश नजर आ रहे थे। करीब 45 मिनट की तेज बारिश से शहर की सड़कों पर पानी बह निकला।

पल्स पोलियो अभियान की सफलता के लिए निकाली जागरूकता रैली

जिले में 23 से 25 जून तक राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान होगा प्रारंभ

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में जिले में 23 से 25 जून तक राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान चलाया जाएगा। पल्स पोलियो अभियान की सफलता के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा शनिवार को जागरूकता रैली निकालकर 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने का आह्वान किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उईके ने बताया कि जिला स्तर पर 22 जून को पल्स पोलियो अभियान को सफल बनाने हेतु जागरूकता रैली को प्रातः 10:30 हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। रैली एएनएम प्रशिक्षण केन्द्र से प्रारंभ होकर कृष्णपुरा वार्ड, तिलक वार्ड, आजाद वार्ड से कोठी बाजार रोड होते हुए लक्ष्मी चौक पहुंची, जहां मानव श्रृंखला बनाई गई।

एसटीआर में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारी तनाव में काम कर रहे..?

नर्मदापुरम। एसटीआर में पदस्थ आईएफएस अधिकारी का अपने अधिनस्थ कर्मचारियों के प्रति व्यवहार ठीक नहीं है.. अधिकारी का अपने कर्मचारियों के प्रति हर दिन रुखा व्यवहार ने उन्हें तनाव में काम करने वाली छवि बना डाली। अधिकारी के कार्यालय पहुंचते ही जो थर थर कांप जाते ऐसे बिरले अधिकारी की लिखित शिकायत हालिया मुख्य सचिव वन मंडल से की गई। एसटीएफ में पदस्थ आईएफएस अधिकारी पूजा नागले का अपने अधिनस्थ कर्मचारियों से व्यवहार ठीक नहीं । शिकायत में सतपुड़ा टाइगर रिजर्व नर्मदापुरम में उप संचालक पूजा नागले का व्यवहार आईएफएस श्रेणी के अधिकारियों से भिन्न भिन्न बताते हुए अधीनस्थ सेवादारों कार्यालयीन कर्मचारियों के प्रति क्रूर और दमनात्मक बताया गया है, अधिकारी अधीनस्थों को अपमान जनक भाषा में उन्हें जलील करने की शगल बताया है। अपने पद का भय दिखाकर केरियर बर्बाद कर देने की धमकी देकर कर्मचारियों को भयभीत और आतंकित करने वाली लिखी गई है। वन विश्राम गृह के सेवादार दुलारे, निजी निवास के रामसिंह सियाराम आदिवासी, कार्यालयीन हेड क्लार्क बातोसिया बड़े बाबू को 21 जून को कार्यालयीन समय की समाप्ति के उपरांत रोका जाकर अभद्र व्यवहार किया गया बताया है। अधिकारी के अमर्यादित व्यवहार से भयभीत होकर जो अस्वस्थ हो गए है, समय बे समय कार्यालयीन कर्मचारियों को बुला कर उन्हें अपमानित किया जा रहा तथा कर्मचारियों के स्वात्य एवं वेतन के शासकीय भुगतान महीनो से लंबित रहे हैं इसे लेकर क्षेत्रीय अधिकारियों कर्मचारियों में आगामी विकास कार्य किस प्रकार संपादित किए जाएंगे के विषय में असमंजस बन गया है। शिकायत के अंत में मुख्य सचिव से अनुरोध किया है कि इनका स्थानांतरित कर सुलझे हुए परिपक्व अधिकारी को एसटीआर में पदस्थ कर विभाग की छवि को सुरक्षित रखने और विभागीय कर्मचारियों के मनोबल को बनाए रखने को कहा है। शिकायत की प्रति. वन बल प्रमुख एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक मध्य प्रदेश सहित कलेक्टर नर्मदापुरम को प्रेषित की गई है।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद संगोष्ठी का समापन

प्रत्येक युग में रचित साहित्य सुदृढ़ भविष्य की पूंजी होता है: राव उदयप्रतापसिंह

सुबह सवेरे सोहागपुर। प्रत्येक युग में रचित साहित्य सुदृढ़ भविष्य की पूंजी होता है। उक्त उद्गार स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री राव उदयप्रतापसिंह ने भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविन्दनगर बनखेड़ी में अखिल भारतीय साहित्य परिषद संगोष्ठी के समापन अवसर पर कहें। इस दो दिवसीय अखिल भारतीय साहित्य परिषद संगोष्ठी में अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्रांत अध्यक्ष डॉ कुमार संजीव, प्रदेश महामंत्री आशुतोष शर्मा, मुख्य वक्ता राष्ट्रीय महामंत्री डॉ ऋषि कुमार, चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटैल आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता ऋषिकुमार मिश्रा ने कहा कि साहित्य अंतर्भाव का प्रादुर्भाव करता है। तथा यह मानव अंतर्चेतना को सुप्त नहीं होने देता। संगोष्ठी में हुए सत्रों में चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटैल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मायने यह नहीं

रखता है कि साहित्यकार को कौन सा सम्मान मिला है।अपितु यह मायने रखता है कि साहित्यकार ने समाज को दिया क्या है। आपने अंत में कहा अखिल भारतीय साहित्य परिषद राष्ट्र चेतना का अनुकरणीय कार्य कर रही है। कार्यक्रम को डाक्टर कुमार संजीव, आशुतोष मिश्रा,गीत मांडवी सिंह आदि ने संबोधित किया। नर्मदापुरम जिलाध्यक्ष सौरभ यादव सूर्य ने बताया कि मध्य प्रांत के 16 जिलों के 90से अधिक साहित्यकारों कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके पूर्व तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता अशोक जमनानी, कीर्ति वर्मा, धुर्वे शर्मा,पुष्पक देशमुख, लोकेश तिवारी, जान्हवी नायक, इंदुशेखर तत्पुरुष, ममता बाजपेई,पूरू शर्मा, अभिषेक जैन, सुधीर गुप्ता, सुनीता यादव, प्रदीप अवस्थी ऋषिकेश भार्गव, डॉ महिमा तारे, डॉ संतोष व्यास आदि ने अपनी बात रखी। तकनीकी सत्र का संचालन सोहागपुर के अमित बिल्लौरे ने किया। कार्यक्रम में साहित्यकार हरीश पांडे,पवन सराठे नवीन हरियाणे, सुभाष यादव , माखन मालवीय, आरती शर्मा आदि ने सहयोग किया। इसी अवसर पर स्मारिका का भी विमोचन किया गया।

कंट्रोवर्सी की सुपर क्वीन हैं कंगना

फ़िल्मी दुनिया कि विवादस्पद नायिका कंगना रनौत ने अब राजनीति में कदम रख लिया। लेकिन, विवादों से उनका पीछा नहीं छूट रहा। वे हमेशा ही विवादों में रही हैं। फ़िल्मी दुनिया में तो उनका ज्यादातर लोगों से झगड़ा हुआ। ऋतिक रोशन, शबाना आजमी, करण जौहर से लगाकर तापसी पन्नू तक से उनका विवाद हुआ। ख़ास बात यह कि हर मामले में पहल खुद कंगना रही। सांसद बनने के बाद एयरपोर्ट पर भी उनको सीआईएसएफ की एक महिला कर्मचारी ने ऐसे ही विवाद के दौरान थप्पड़ जड़ दिया था।

कभी आजादी को भीख बताने से लेकर तो कभी करण जौहर को नेपोटिज्म का झंडा वाहक बताने वाली कंगना रनौत कई बार विवादों में फंस चुकी हैं। इसके बावजूद वे खामोश नहीं रहती। हिमाचल प्रदेश के मंडी से लोकसभा चुनाव जीतने के बाद कंगना रनौत को चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर सीआईएसएफ की एक सुरक्षाकर्मी ने थप्पड़ जड़ दिया। बताया गया कि अपने पर्स की स्कैनिंग कराने मुद्दे पर वे इस महिला जवान से झगड़ पड़ी और उसे सांसद होने की धौंस जमाई थी। पर ये पहली बार नहीं हुआ। अगले दिन संसद भवन बाहर वे इस मुद्दे पर पूछे सवाल को लेकर मीडिया से भिड़ गई थी। मंडी में चुनाव प्रचार दौरान उन्होंने अपनी तुलना अमिताभ बच्चन की लोकप्रियता से करते हुए कहा था कि दर्शकों में अमिताभ के बाद सिर्फ वे ली लोकप्रिय हैं।

कंगना ने राजनीति जॉइन करने से पहले एक बयान में कहा था कि भारत को 1947 में आजादी भीख में मिली थी. भारत को असली आजादी तब मिली, जब 2014 में नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने। इतना ही नहीं कंगना रनौत महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे से भी उलझ चुकी हैं। बीएमसी ने कंगना रनौत के घर का अवैध हिस्सा तोड़ दिया है, जिसका गुस्सा एक्ट्रेस ने उद्धव ठाकरे पर निकाला था। कंगना रनौत ने कहा था कि उद्धव ठाकरे आज मेरा घर टूटा है, कल तेरा घमंड टूटेगा।

कंगना रनौत की शबाना आजमी से भी तू-तू मैं-मैं हो चुकी है। कंगना रनौत ने 2019 में पुलवामा हमले के बाद शबाना आजमी को टुकड़े-टुकड़े गैंग का समर्थक बताया था। उन्होंने 'कॉफी विद करण' में फिल्ममेकर करण जौहर को नेपोटिज्म का झंडा वाहक बताया और साथ ही स्टारकिड्स को लॉन्च करने को लेकर करण जौहर को खूब फटकार भी लगाई थी। कंगना ने ऋतिक को 'मूर्ख एक्स' बताया था, जिसके बाद ऋतिक ने कंगना पर केस दर्ज करवा दिया। कंगना रनौत ने एक इंटरव्यू के दौरान तापसी पन्नू और ऋचा चड्ढा को बी-ग्रेड एक्ट्रेस भी बताया था। यहां तक कि कंगना ने स्वरा भास्कर को भी आड़े हाथों लिया। जावेद अख्तर ने एक्ट्रेस कंगना रनौत पर मानहानि का मुकदमा दर्ज करवा दिया था। उन्होंने कहा था कि जावेद अख्तर ने ऋतिक और उनके विवाद के बीच टिप्पणी की थी। इस पर जावेद अख्तर ने एक्ट्रेस के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दर्ज करवाया।

'सिकंदर' से ऐसा होगा सलमान खान का लुक

सलमान खान की अपकमिंग फिल्म 'सिकंदर' को लेकर जबरदस्त बज बना है। यह फिल्म अगले साल ईद के मौके पर रिलीज होगी, लेकिन इस फिल्म को लेकर अभी से ही क्रेज देखने को मिल रहा है। फिल्म में सलमान खान के साथ एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना लीड रोल में नजर आएंगी। हाल ही में सलमान खान ने फिल्म की पहली झलक शेयर करते हुए बताया कि 'सिकंदर' की शूटिंग शुरू हो चुकी है। सलमान खान का यह पोस्ट सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

सलमान खान ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक तस्वीर शेयर की है। इस फोटो में बॉलीवुड के दबंग खान फिल्म के प्रोड्यूसर साजिद नाडियाडवाला और डायरेक्टर के साथ खड़े नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर में सलमान खान ब्लू कलर की टीशर्ट पहनें नजर आ रहे हैं और उन्होंने आंखों पर काला चश्मा लगाया हुआ है। इस तस्वीर को शेयर करते हुए एक्टर ने कैप्शन में लिखा 'ईद 2025 पर नजरें हैं, टीम के साथ।'

सलमान खान के इस पोस्ट पर लोग खूब रिएक्ट रहे हैं और अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा आप बहुत हैंडसम लग रहे हैं सिकंदर, ऑल द वेरी बेस्ट। तो वहीं एक दूसरे यूजर ने लिखा, बवाल होगा अब। एक और यूजर ने सलमान खान के पोस्ट पर रिएक्ट करते हुए लिखा, सलमान दिन पर दिन और भी ज्यादा जवान होते जा रहे हैं। सलमान खान और रश्मिका मंदाना स्टारर फिल्म 'सिकंदर' को जहां साजिद नाडियाडवाला और वर्दा खान नाडियाडवाला प्रोड्यूस कर रहे हैं। वहीं इसका डायरेक्शन एआर मुरुगादोस कर रहे हैं। आखिरी बार सलमान खान फिल्म 'टाइगर 3' में नजर आए थे। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई थी।

रियल बॉक्स

दर्शकों के सिर चढ़कर बोलने लगा ओटीटी

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फ़िल्मों के सभी बड़े सितारे धीरे-धीरे ओटीटी के परदे में समा गए। यहां तक कि नामी फिल्म डायरेक्टरों ने भी ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए फ़िल्में और वेब सीरीज बनाना शुरू कर दिया। मनोरंजन के इस माध्यम ने कुछ ऐसे सितारों को भी जन्म दिया, जो फ़िल्मी सितारों से ज्यादा लोकप्रिय हो गए। ओटीटी के आने से पारंपरिक सिनेमा और टीवी के अलावा भी कुछ अभिनेताओं को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए नया प्लेटफॉर्म मिला। यह माध्यम वेब सीरीज निर्माताओं के साथ नए कलाकारों के लिए भी रास्ते खोल रहा है। ओटीटी ने भौगोलिक और भाषा की सीमाओं से परे दर्शकों को प्रभावित किया है। इस ठिकाने से मनोरंजन की दुनिया में बड़ा बदलाव देखने को मिला।

कोरोना काल के बाद मनोरंजन का चेहरा काफी कुछ बदल गया। महामारी के कारण जब सारे सिनेमाघर बंद कर दिए गए थे, उस दौर में दर्शकों की मनोरंजन की कमी ओटीटी प्लेटफॉर्म ने पूरी की। करीब डेढ़ साल तक इसी माध्यम दर्शकों ने कई घंटों तक दिल बहलाया। तब तो इस तरह की समीक्षा का समय नहीं था कि ओटीटी प्लेटफार्म पर क्या अच्छा है और नहीं! पर, जब कोरोना काल ख़त्म हुआ और सिनेमा घरों के दरवाजे खुले, तब भी दर्शकों का ओटीटी मोह ख़त्म नहीं हुआ। अब महामारी के वे बुरे दिन बीत गए, फिल्मों का पुराना दौर लौट आया, फिर भी ओटीटी का मोह ख़त्म नहीं हुआ। कोरोना के समय तो ओटीटी पर दर्शकों ने अपनी पसंद-नापसंद का ध्यान नहीं रखा। क्योंकि, उस समय मनोरंजन का कोई और विकल्प नहीं था, पर अब ओटीटी ने अपना स्तर फिल्मों की तरह सुधार लिया। बल्कि, कुछ मामलों में फिल्मों से बेहतर हो गया। जिस फिल्म इंडस्ट्री को अपने सर्वशक्तिमान होने का दंभ था, वह भी ओटीटी के सामने शरणागत हो गया।

एक समय था जब फिल्मों में वही चलता, जिसका नाम होता था। प्रतिभा होने के बावजूद नए कलाकारों को बड़ी मुश्किल से मौका मिलता रहा। लेकिन, अब वो दौर नहीं रहा। ओटीटी ऐसे कई ऐसे नए कलाकारों को सामने लाने और अपनी अदाकारी दिखाने का जरिया बना, जिनके सपनों पर जंग लगने लगी थी। इनमें कई ऐसे चेहरे भी हैं, जिन्हें फिल्मकारों ने नकार दिया था, पर आज वे ओटीटी के सितारे हैं। फिल्म इंडस्ट्री में यह बदलाव बरसों बाद आया। दरअसल, ये हालात दो तरह से आए। एक तो नए कलाकारों को इस प्लेटफॉर्म ने मौका दिया और सिनेमा के नामी सितारों को इस सच्चाई से वाकिफ कराया कि अच्छा कथानक, अच्छा निर्देशन और अच्छी अदाकारी कहीं भी हो उसे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

जयदीप अहलावत आज ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आने वाली वेब सीरीज के बड़े कलाकार हैं। उनकी अपनी पहचान है। पर, एक समय वे फिल्मों में छोटे-मोटे रोल तक सीमित थे। अक्षय कुमार की फिल्म 'खट्टा मीठा' और आलिया भट्ट की 'राज़ी' से उन्हें पहचाना तो गया, पर उतना काम नहीं मिला। लेकिन, 'पाताल लोक' वेब सीरीज ने उन्हें दर्शकों की आंख में ला दिया। अपनी अदाकारी से उन्होंने साबित कर दिया, कि वे जिस तरह के कलाकार थे, उसे सिर्फ ओटीटी ने साबित किया। ऐसे ही एक कलाकार हैं प्रतीक गांधी जिन्होंने हर्षद मेहता पर बनी वेब सीरीज '1992 ~ द स्कैम' में लीड रोल किया और देखने वालों के दिल पर छा गए। जबकि, इससे पहले वे गुजराती फिल्मों और थिएटर तक सीमित थे। वे अच्छे कलाकार हैं, पर उन्हें पहचाना गया ओटीटी की वेब सीरीज जरिए ही।

'मिर्ज़ापुर' जैसी हिट वेब सीरीज़ में निगेटिव लीड रोल निभाने वाले दिव्येंदु शर्मा को 'बत्ती गुल मीटर चालू' में श्रद्धा कपूर के साथ रोमांस करने का मौका इसीलिए मिला कि उन्होंने 'मिर्जापुर' से नाम कमाया। सीज़न 2 में उनका कैरेक्टर खत्म जरूर हो गया, पर उनके मुन्ना भैया के किरदार को भुलाया नहीं जा सकेगा। फिल्म इंडस्ट्री में विक्रांत मेसी दस साल तक छोटे-छोटे किरदार निभाते रहे। लेकिन, सितारों की रोशनी में उनकी कोई चमक दिखाई नहीं देती थी। लेकिन, जब वे 'मिर्ज़ापुर' वेब सीरीज़ में बबलू और 'क्रिमिनल जस्टिस' में आदित्य बने तो दर्शकों ने उनकी अदाकारी लोहा माना। मानवी गगरू ने नो वन किल्ड जेसिका, आमरस में और यहाँ तक कि 'पीके' में भी सपोर्टिंग रोल किए। किंतु, जब दर्शकों ने 'ट्रिपलिंग' में मानवी को देखा तो वे समझ गए इस लड़की की ऐक्टिंग में दम है। इसके बाद ही उन्हें 'शुभ मंगल ज़्यादा सावधान' और 'उजड़ा चमन' जैसी फिल्मों में लीड रोल का मौका मिला।

वेब सीरीज 'फर्जी' में अपराध की दुनिया में शाहिद कपूर के पार्टनर बने भुवन अरोड़ा ने फ़िरोज़ की भूमिका में अपने काम से दर्शकों को प्रभावित किया। यह अब तक कि सबसे स्ट्रीमिंग वेब सीरीज में से एक है। टीवी सीरियल में करण टॅकर जाना माना नाम थे। लेकिन, उनके करियर में मोड़ आया नीरज पांडे के 'स्पेशल ऑप्स' से। इसमें उन्होंने अपनी वास्तविक प्रतिभा दिखाई। 'खाकी~ द बिहार चैप्टर' में आईपीएस अमित लोढ़ा की लाइफ को चित्रित करते हुए प्रशंसा अर्जित की। ये भी सफल ओटीटी शो में से एक रहा। इसी तरह ताहा शाह बदूशा ने 'लव का द एंड' में श्रद्धा कपूर के साथ चॉकलेट बॉय का रोल निभाया। उन्होंने मैग्नम ओपस, ताज~ डिवाइडेड बाय ब्लड के साथ खतरनाक राजकुमार मुराद के किरदार में अपना कौशल दिखाया। इस शो ने मुगल राजवंश के कई अनकहे रहस्यों को उजागर किया और ताहा को एक कलाकार के रूप में पहचान दी।

वेब सीरीज 'क्लास' में नीरज की भूमिका में गुरफतेह सिंह पीरजादा ने अपनी अलग छाप छोड़ी। स्पेनिश हिट शो 'एलीट' के रूपांतरण शो 'क्लास' ने अपना मूल भाव नहीं खोया और ओटीटी के दर्शकों की भावनाओं झंकृत कर दिया। गुरफतेह सिंह पीरजादा को दर्शकों ने पहले 'ब्रह्मास्त्र' और 'गिल्टी' में भी देखा था। लेकिन 'क्लास' में गंभीर प्रदर्शन से अलग बनाई। वेब सीरीज 'जुबली' ने नए सितारे सिद्धांत गुप्ता को जन्म दिया। आत्मविश्वास से भरपूर किरदार में उन्होंने दर्शकों को प्रभावित किया। उन्हें भविष्य के सबसे होनहार सितारों में से एक बना दिया। 'इनसाइड एज' और 'सिल्वर स्क्रीन' पर अपने काम की काबिलियत की झलक दिखाने के बाद सिद्धांत गुप्ता ने 'जुबली' से अपनी क्षमता को साबित किया। थिएटर से आने वाले जिम सर्भ ने फिल्म और ओटीटी समेत सभी माध्यमों पर अपनी छाप छोड़ी। इसके अलावा 'पद्मावत' और 'मेड इन हेवन' जैसी फिल्मों में भी उन्होंने अच्छा काम किया। 'रॉकेट बॉयज़' में डॉ होमी भाभा के किरदार में उन्होंने न केवल प्रशंसा बटोरी बल्कि पुरस्कारों में भी हिस्सेदारी की। ये वो कलाकार हैं जिन्हें दर्शक चेहरे से जानते हैं।

कोरोना काल समाप्त हो गया, पर महामारी के दौर ने दर्शकों को घर में ही मनोरंजन की दुकान का रास्ता जरूर बता दिया। जब टीवी आया, तब भी मनोरंजन की दुनिया में इतना बड़ा बदलाव नहीं आया था, जो ओटीटी से आया। सबसे बड़ा चमत्कार तो यह हुआ कि बड़े परदे के नामी सितारों ने भी ओटीटी में अपनी हिस्सेदारी ढूंढ ली। सिर्फ एक्टिंग में ही नहीं वेब सीरीज निर्माण में भी ये सितारे और फ़िल्मकार उतर आए। संजय लीला भंसाली के बाद अब फिल्म इंडस्ट्री में उनसे कोई बड़ा डायरेक्टर नहीं बचा, जो ओटीटी में नहीं आया हो! अब दर्शक घर में बैठकर मनोरंजन करना पसंद करने लगे। बॉबी देओल, नसीरुद्दीन शाह, अरशद वारसी काजोल, करिश्मा कपूर और अभिषेक बच्चन जैसे कई कलाकारों ने ओटीटी पर डेब्यू किया। कई नामचीन और बड़े स्टार्स ने फिल्मों और वेब सीरीज के जरिए डेब्यू किया। रवीना टंडन ने ओटीटी पर अपना डेब्यू 'आरण्यक' के साथ किया। इसमें वे पुलिस वाले की भूमिका निभा रही हैं। वे एक हत्या के मामले का पता लगाने के लिए कोई मौका नहीं छोड़ती है।

अजय देवगन की रूद्र, रवीना टंडन की आरण्यक, माधुरी की 'फेम गेम' और सुष्मिता सेन की आर्या-1 और आर्या-2। ने इन्हें नईदुनिया रास्ता दिखा दिया। अजय देवगन 'रुद्र ~ द एज ऑफ डार्कनेस' की रिलीज के साथ अपना एक्चुअल ओटीटी डेब्यू करने वाले हैं। इस सीरीज में वे एक पुलिस वाले की भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे। उनके साथ ईशा देओल भी हैं। माधुरी भी ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आ चुकी है। अपने वेब शो 'फाइंडिंग अनामिका' से उन्होंने ओटीटी पर डेब्यू किया। यह एक थ्रिलर शो है। सोनाक्षी सिन्हा ने 'फॉलन' सीरीज से अपना ओटीटी डेब्यू किया। फिल्मों में बड़ी पहचान की मोहताज रही सुष्मिता सेन ने भी ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपना जलवा दिखाया। उनकी वेब सीरीज 'आर्या' में अपनी एक्टिंग से दर्शकों को उन्होंने चौंका दिया। इस शो का दूसरा सीजन भी आ गया। ओटीटी प्लेटफॉर्म के सराहे जाने के बाद कई सितारों ने ओटीटी पर डेब्यू किया। शाहिद कपूर ने वेब सीरीज 'फर्जी' से ओटीटी पर कमाल दिखाया। अनिल कपूर ने 66 की उम्र में 'द नाइट मैनेजर' से माध्यम को अपनाया। मनीष पॉल जैसे होस्ट और एक्टर ने फिल्म 'रफूचक्कर' से ओटीटी पर डेब्यू किया। आदित्य रॉय कपूर ने भी वेब सीरीज 'द नाइट मैनेजर' से ओटीटी पर धमाकेदार एंट्री की। करीना कपूर भी ओटीटी पर डेब्यू किया। वे 'जाने जान' में नजर आई। सोनाक्षी सिन्हा ने भी 'दहाड़' वेब सीरीज से ओटीटी पर कदम रखा।

मनोज बाजपेयी ने ऐसे किरदार निभाए, जिनकी तारीफ की गई। उन्हें हमेशा एक अच्छे कलाकार के तौर पर लोग याद किया गया। उनकी वेब सीरीज 'द फैमिली मैन' सीरीज ने उन्हें ओटीटी का बड़ा स्टार बना दिया। 'सेक्रेड गेम्स' से सैफ अली खान ने ओटीटी पर डेब्यू किया और दर्शकों को लुभा लिया। नवाजुद्दीन सिद्दीकी भी बड़े अभिनेताओं की लिस्ट में हैं। काजोल ड्रामा सीरीज़ 'द ट्रायल' में अपने प्रदर्शन और 'लस्ट स्टोरीज़-2' में अपनी भूमिका के साथ ओटीटी की दुनिया में भी कदम रखा। पंकज त्रिपाठी तो अपने प्रभावशाली अभिनय के लिए मशहूर हैं। मिर्जापुर, सेक्रेड गेम्स और 'क्रिमिनल जस्टिस' जैसी वेब सीरीज़ में उनकी भूमिकाओं ने उन्हें पहचान दिलाई। कियारा आडवाणी ने 'लस्ट स्टोरीज़' और 'गिल्टी' जैसे प्रोजेक्ट से ओटीटी पर नाम कमाया। नरगिस फाखरी ने 'टटलूबाज' में अभिनय के साथ काम शुरू किया। ओटीटी पर मनोज बाजपेयी की यात्रा असाधारण रही। ओटीटी ने उन्हें डिजिटल दुनिया में ख़ास भूमिका निभाने वाले कलाकार के रूप में स्थापित किया। द फैमिली मैन, रे, गुलमोहर और 'बंदा' जैसे शो उनकी प्रतिभा का प्रतीक है।

फिल्म इंडस्ट्री में कई कलाकार ऐसे हैं, जिनका सितारा बहुत कम वक्त के लिए ही चमका। इन कलाकारों ने जब इंडस्ट्री में कदम रखा तो दर्शकों ने जमकर प्यार लुटाया। लेकिन, बाद में इनके सितारे गर्दिश में चले गए। बॉबी देओल ऐसे ही कलाकार हैं। बॉबी की ही तरह कई ऐसे कलाकार हैं, जिनके करियर को ओटीटी ने बचाया। इस माध्यम ने ऐसे कई कलाकारों को जीवनदान दिया। बरसात, बिच्छू, सोल्जर और 'बादल' जैसी फिल्मों से चमके बॉबी देओल का अचानक ही बुरा वक्त शुरू हो गया। पर, ओटीटी ने उन्हें फिर स्टार बना दिया। बॉबी की 'आश्रम' सीरीज ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। अब तक इसके तीन सीजन आ गए। ऐसे ही अभिषेक बच्चन ने बॉब बिस्वास, दसवीं और 'द बिग बुल' जैसी फिल्मों से अपनी अलग पहचान बनाई है। जैकलीन फर्नांडिस ने 'मिसेस सीरियल किलर' से दर्शकों को बता दिया है कि अच्छे रोल मिलें तो वे कमाल कर सकती हैं। अर्जुन कपूर ने कोरोना काल के दौरान भूत पुलिस, संदीप और पिंकी फरार और 'सरदार का ग्रैंडसन' जैसी फिल्में ओटीटी पर रिलीज की। अभी आगे देखना है कि ओटीटी मनोरंजन की दुनिया में कहां-कहां अपना जादू चलाता है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

भविष्य की कल्पना पर बनी 'कल्कि' का भविष्य क्या

अशोक जोशी

यह भविष्य की कल्पना पर आधारित काल्पनिक कथानक पर बनी फिल्म है। काल्पनिक दुनिया, उससे जुड़े लोग और उस काल की चीजें तैयार करना फिल्मकार के लिए आसान नहीं है।

खासतौर पर तब, जब उस फिल्मकार का पहला प्रयास हो। इस लिहाज से 'कल्कि 2898 एडी' के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता निर्देशक नाग अश्विन के सामने कुछ ऐसी ही चुनौतियां सामने आई थी। निर्देशक नाग अश्विन ने इस फिल्म से पहली बार साइंस फिक्शन जानर में हाथ आजमाया है।

जून के जाते जाते वातावरण से गर्मी का माहौल भले ही घटने लगे, लेकिन सिनेमा हॉल में इस दौरान तापमान बढ़ने की अत्यधिक संभावना व्यक्त की जा रही है क्योंकि जून के आखिरी सप्ताह में 27 जून को देशभर में हिंदी. तमिल, तेलुगु समेत कई भाषाओं में कल्कि एडी 2898 का प्रदर्शन किया जा रहा है। कल्कि 2898 एडी नाग अश्विन द्वारा लिखित और निर्देशित आगामी भारतीय विज्ञान कथा एक्शन फिल्म है। यह फिल्म टॉलीवुड में बनाई गई है जिसका निर्माण वैजयंती मूवी के तहत सी असवानी दत्त कर रहे हैं। प्रभास, दीपिका,अमिताभ और कमल हासन के अलावा फिल्म में दिशा पाटनी, शाश्वत चटर्जी, मृणाल ठाकुर, शोभना, राजेंद्र प्रसाद, पसुपति जैसे कलाकार भी दिखाई देने वाले हैं।

फिल्म की घोषणा फरवरी 2020 में वैजयंती मूवीज की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर की गई थी। हालांकि, कोरोना-19 महामारी के कारण इसके निर्माण में एक साल की देरी हुई। फिल्मांकन जुलाई 2021 में हैदराबाद के रामोजी फिल्म सिटी में बनाए गए एक सेट पर शुरू हुआ। इसे अब तक की सबसे महंगी भारतीय फिल्मों में से एक माना जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार इसके निर्माण पर कुल 600 करोड़ रुपए का खर्च आया है। फिल्म का संगीत संतोष नारायणन द्वारा दिया गया है। छायांकन जोर्डजे स्टोजिलजकोविक द्वारा किया गया है जबकि प्रोडक्शन डिजाइन नितिन जिहानी चौधरी द्वारा किया गया है। गिरफ्तार के बाद इस फिल्म में कमल हासन और अमिताभ एक बार फिर साथ साथ दिखाई देंगे। यह बात अलग है कि इस फिल्म में अमिताभ नायक और कमल हसन खलनायक के किरदार में रहेंगे।

साल 2021 में इस फिल्म की शूटिंग शुरू होने के साथ इसके वीएफएक्स पर भी काम शुरु हो गया था। फिल्म का वीएफएक्स खर्च करीब 200 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। निर्माता को भारतीय टिकट खिड़की पर मैड मैक्स और डून जैसी हॉलीवुड फिल्मों की अच्छी कमाई देखकर, इस शैली की फिल्म बनाने का ख्याल आया था। इस फिल्म में दिखाए काशी शहर को बनाने के लिए सेट और स्पेशल इफेक्ट्स के साथ देश की कुछ प्रतिष्ठित और बेहतरीन वीएफक्स कंपनियों की मदद ली। उनकी सहायता से ही वह अपनी कल्पना को पर्दे पर लाने में सफल हो पाए।

यह भविष्य की कल्पना पर आधारित काल्पनिक कथानक पर बनी फिल्म है। काल्पनिक दुनिया तथा उससे जुड़े लोग और चीजें सब कुछ तैयार करना किसी भी फिल्मकार के लिए आसान नहीं होता है। खासतौर पर तब, जब उस फिल्मकार का पहला प्रयास हो। इस लिहाज से कल्कि 2898 एडी के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता निर्देशक नाग अश्विन के सामने कुछ ऐसी ही चुनौतियां सामने आयी थी। निर्देशक नाग अश्विन ने इस फिल्म से पहली बार साइंस फिक्शन जानर में हाथ आजमाया है। नाग अश्विन को सेट और स्पेशल इफेक्ट के माध्यम से कल्कि 2898 एडी की दुनिया का निर्माण करने में तीन साल से ज्यादा का समय लगा। और अपनी काबिलियत से पूरा कर इसे एक भव्य फैंटेसी फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने में उन्होंने कामयाबी पायी है।

फिल्म के ट्रेलर और सेंसर बोर्ड के सामने की गई स्क्रीनिंग के दौरान कुछ ऐसा घटा कि फिल्म के अनोखे होने और इसकी सफलता पर मुहर सी लग गई है। जिन्होने भी इसका ट्रेलर देखा वह मान रहे हैं कि यह फिल्म हॉलीवुड को टक्कर देगी और कमाई के कीर्तिमान स्थापित भी करेगी। यदि फिल्मी दुनिया से मिली जानकारी पर विश्वास किया जाए तो पता चलता है कि सेंसर बोर्ड के अधिकारियों ने जब ये फिल्म देखी तो वो हैरत में पड़ गए। फिल्म के शानदार विजुअल और निर्देशक नाग अश्विन के डायरेक्शन ने उन्हें तारीफ करने पर मजबूर कर दिया. फिल्म जब खत्म हुई तो तमाम बोर्ड अधिकारियों ने इसे स्टैंडिंग ओवेशन दिया।

दुनिया के खत्म होने के समय पर आधारित इस फिल्म में 'बिग बी' के नाम से चर्चित अभिनेता अमिताभ बच्चन 'अश्वत्थामा' की भूमिका में हैं और वहीं प्रभास विष्णु के अवतार भैरव की भूमिका निभा रहे हैं। नाग अश्विन के द्वारा निर्देशित 'कल्कि 2898 एडी' में कमल हासन ने 'सुप्रीम यास्किन' की भूमिका निभाई है जबकि दीपिका पादुकोण भी सुमति की भूमिका में हैं।

कल्कि में अमिताभ के लुक की बहुत चर्चा है। इस फिल्म में अमिताभ बच्चन एक अलग लुक में नजर आएंगे। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस लुक के लिए मेकअप करने में उन्हें करीब तीन घंटे लग जाते थे। इस बारे में स्वयं अभिनेता अमिताभ बच्चन ने कहा कि वह भविष्य पर आधारित फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' का हिस्सा बनकर वह सम्मानित महसूस कर रहे हैं। यह फिल्म दर्शकों को एक ऐसी दुनिया में ले जाने का वादा करती है, जिसे भारतीय सिनेमा में पहले कभी नहीं दिखाया गया। उन्होंने कहा, ÷यह अविश्वसनीय है कि कोई व्यक्ति भविष्य में इतने आगे के समय पर आधारित किसी फिल्म की कल्पना कैसे कर सकता है।

'कल्कि 2898 एडी' में खलनायक की भूमिका निभा रहे अभिनेता कमल हासन ने माना है कि उनकी पर्दे पर इस तरह का किरदार निभाने की काफी दिनों से इच्छा थी और वह खुश हैं कि उनको इस फिल्म में यह अवसर मिला। कमल हासन का मानना है कि जहां हीरो रोमांटिक गाने गा रहे हैं और हिरोइन का इंतजार कर रहे हैं, खलनायक उनसे एक कदम आगे बढ़ सकता है और वह कर सकता है जो वह चाहता है। फिल्म में कमल हासन का लूक भी एकदम अलग होगा। गंजे खलनायक के रूप में उनका किरदार एक ऋषि की तरह बुरे विचारों वाला है। वैसे तो इससे पहले भी कई फिल्मों की भव्यता को लेकर उनकी सफलता के बारे में ढेरो कयास लगाए जाते रहे हैं। लेकिन फिल्म का चलना न चलना दर्शकों के मूड पर निर्भर करता है। क्या कल्कि इस मिथक को तोड़कर वाकई सफल होगी इसका पता तो प्रदर्शन के बाद ही चलेगा। लेकिन,फिल्म की तकनीक, बजट और स्टार कास्ट ने दर्शकों की उम्मीदों को बहुत बढ़ा दिया है।

वो सुबह... कभी तो आएगी...!

प्रकाश पुरोहित

उ से अकसर शाम को कार की ड्रायविंग-सीट पर बैठे देखा है, एक-डेढ़ घंटे!

''अगर मालिक पैदल घूमने गए हैं, तो तुम्हारी इच्छा नहीं होती है, घूमने की।'' कार में बैठे ड्राइवर से पूछा।

''यह ऐसी आदत है, जो एक बार लग जाए तो फिर छूटती नहीं, क्योंकि तब हाथ-पैर दर्द करने लगते हैं। वैसे मैं फिट हूं।'' उसने सीट पर बैठे बैठे ही कहा।

''ड्रायवरी करते कितना समय हो गया?''

''ज्यादा समय नहीं हुआ!''

''तो फिर ड्रायवरी से पहले क्या काम किया?'' ''क्लब में बाउंसर का काम किया है दस साल, फिर पिछले साल गोली-काण्ड हो गया था, बस तब से छोड़ दिया। घरवालों ने भी मना किया। तभी से ड्रायवर हूं।'' उसने बताया।

''तुम्हारा नाम क्या है?''

''पूजा धर्मेंद्र चौकसे!'' यकीन नहीं हुआ, कि इतनी देर से जिससे बात कर रहा था, लड़की है। ना कद-काठी से, ना पहनावे से और ना ही अंदाज से। लड़कों जैसे ही कतरे हुए बाल, माथे पर गहरा लाल तिलक, टी-शर्ट-इन, जींस पेंट, बेल्ट, स्पोर्ट्स शू, हाथ में कड़ा और कलावा भी। आंखों में हेड-लाइट जैसी चमक। बैठने का अंदाज भी बेफिक्री वाला और चेहरे पर गजब का भरोसा, खुद पर।

पहली नजर में तो अभी भी बाउंसर ही लग रही थी। आवाज में थोड़ा पतलापन, लेकिन यह काफी नहीं है, उसे लड़की समझने के लिए। अपनी समझ पर अफसोस हुआ और उसके अंदाज पर गर्व, उन तमाम नजाकत भरी हरकतों को उसने जैसे खूंटी पर टांग दिया था, जिनकी वजह से कोई उसे लड़की समझता। हां, उसकी मुस्कान ही साथ नहीं छोड़ पाई और यही खूबी भी है।

पूजा धर्मेंद्र चौकसे, यही तो नाम बताया है उसने, जो अभी सिर्फ सत्ताइस साल की है। पूजा को अपने बारे में बताने से कोई हिचक भी नहीं है। जब सत्रह की थी, तभी ऑटो-रिक्शा ड्राइवर पिता की किडनी खराब हो गई और वे बिस्तर से लग गए। तब पूजा ही घर में सबसे बड़ी थी। छोटी बहन और दो छोटे भाई, मां और बीमार पिता! पढ़ाई भी छूट गई और नौकरी तलाशनी पड़ी। ऊंची-पूरी काया और दबंग अंदाज की वजह से किसी ने नाइट-क्लब में बाउंसर की नौकरी का कहा तो पूजा ने फौरन मंजूर कर लिया। पूरे दस साल अलग-अलग क्लबों में काम किया। घर चलने लगा।

''क्या क्लब में हुड़दंगियों से डर नहीं लगता था?''

''डर तो उन्हें लगता था, कि जरा भी बद्तमीजी, किसी से भी की, तो धुलाई हो जाती थी। फिर वैसे भी लड़की होने की वजह से लोग इज्जत करते थे। हर जगह की तरह, वहां भी अच्छे ज्यादा और बुरे कम होते थे। आमतौर पर झगड़े की नौबत नहीं आती थी, जोर से डपट ही काम कर देती थी। इतने समय काम किया, लेकिन मुझ से किसी ने बद्तमीजी नहीं की, बल्कि मुझे देखते ही सीधे हो जाते थे, यही काम तो होता है बाउंसर का। लड़कियों को भी

हमारी वजह से हिम्मत मिलती थी और किसी की हिम्मत नहीं होती थी, उन्हें हाथ भी लगा दें। मुझे किसी से डर नहीं लगता और सभी से मुस्करा कर ही बात करती थी। आज भी कई मिल जाते हैं और पहचान लेते हैं।'' पूजा ने बताया।

''पैसा अच्छा मिलता था बाउंसर को?''

''हां, छोटी बहन की शादी कर दी, भाइयों को पढ़ा रही हूं, पिता का इलाज हो रहा है और घर खर्च भी पूरा हो जाता है। अच्छी बात है कि अब लड़कियां भी इस फील्ड में आ रही हैं, और उनकी वजह से क्लब का माहौल भी बदला है। लोग इज्जत करते हैं लड़कियों की।''

''तो फिर ये ड्रायवरी...?''

''पिता का रिक्शा सबसे पहले चलाया। बड़ी गाड़ी चलाने की तमन्ना थी, तो सीख ली। पूरा राजस्थान नाप लिया कार से, तो खुद पर भरोसा होने लगा। किसी ने बताया कि कार ड्राइवर की जरूरत है तो खुद ही पहुंच गई। परिवारवाले हैं तो उन्होंने भी हिम्मत दिखाई और पहली बार किसी लड़की को कार-ड्राइवर की नौकरी दी। कह सकती हूं इंदौर की पहली लड़की हूं, जो प्रायवेट कार की शोफर हूं। वैसे तो लड़कियां आइ-बस भी चलाती हैं और इ-रिक्शा भी खूब चलाने लगी हैं, मगर कार ड्राइवर तो शायद सिर्फ मैं ही हूं। चाहती हूं कि और भी लड़कियां आएं। ऐसा कोई काम नहीं जो लड़की ना कर सके।'' पूजा ने कहा।

''...तो आगे क्या, यही करना है क्या?''

''नहीं जी, पढ़ाई कर रही हूं, अगले साल बी-काम. हो जाएगा, तब एएसआई की तैयारी करूंगी। मुझे तो पुलिस अधिकारी बनना है और बनकर रहूंगी। तब तक ही यह काम है, अब घर तो चलाना ही है। पिछली बार कुछ नंबर से रह गई थी, मगर अब पूरी कोशिश करूंगी।'' उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि सफल होगी तेरी आराधना!

''ये पूजा धर्मेंद्र चौकसे...?''

''धर्मेंद्र तो पिताजी का नाम है और यह नाम मुझे पसंद है, इसलिए पूरा नाम ही बताती हूं।''

''शादी के बाद तो पति का नाम लग जाएगा?''

''नहीं, यह नाम मैं कभी नहीं छोड़ूंगी, और ना ही किसी और का नाम मेरे नाम के साथ लगाऊंगी। क्यों जरूरी है, लड़के नाम लगाते हैं क्या पत्नी का, तो फिर मैं क्यों मेरे पिता का नाम छोड़ दूं...?''

''शादी के बारे में सोचा है कुछ?''

''नहीं जी, अभी तो बहुत काम बाकी हैं, फुरसत मिली तो कर लेंगे। इंकार भी नहीं है, लेकिन शादी से जरूरी काम पूरे करने हैं, जब तक पुलिस ना हो जाऊं, तब तक तो बिलकुल नहीं।'' पूजा ने बताया।

''कुछ कहना है लड़कियों से...?''

''आइ-बस की ड्रायवर से मिली थी... तो मैंने यही कहा कि दमखम से काम से काम करना चाहिए, हम किसी की मेहरबानी से नहीं हैं। लड़कियों वाला अंदाज भी छोड़ना होगा... क्या फर्क है लड़के और लड़की में... तो फिर लड़की ही क्यों नजाकत-नरमाई दिखाए। लड़का और लड़की के बजाय इंसान बने रहना जरूरी है!''

एक और खास बात, पूजा से इंटरव्यू का पूछा तो फौरन तैयार हो गई और यूं बात करने लगी, जैसे रोज की बात हो, और उससे बढ़ कर यह, कि उसने ना तो मेरा परिचय पूछा और ना ही यह जानने की कोशिश ही की, कि इंटरव्यू कहां के लिए है, कब छपेगा। यह मेरी जिंदगी का अनूठा अनुभव रहा!

'पूजा की आराधना सफल हो', हम यही दुआ करें, मन से!

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

स्वर्णा: स्त्री होने के कारण नहीं मिली रवींद्र नाथ जैसी प्रशंसा

द्वा रकानाथ एवं दिंगबरी की बड़ी संतान देवेंद्रनाथ और उनकी पत्नी सारदा सुंदरी जिन्होंने चौदह संतानों को जन्म दिया जिनमें से एक संतान रवीन्द्रनाथ ठाकुर थे जो सबसे छोटे थे। पर बाकी बहन भाई का क्या? सभी बड़ों की मृत्यु के बाद देवेंद्रनाथ बचे थे जो अपने ब्रह्मसामाज के काम में लीन रहते थे। सभी भाई बहन सक्षम थे कुछ का विवाह हो गया था फिर हम सिर्फ रवींद्रनाथ (रोबी) की ही बात क्यों करते है? क्या अन्य भाई-बहन पढ़े लिखे या योग्य नहीं थे। कहते है बरगद की छाया में छोटे मोटे पेड़ नहीं पनपते। हालांकि जब इन विदुषी स्त्रियों के जीवन के बारे में जाना तो दंग रह गई स्कूल नहीं जाने वाली ये स्त्रियां ज्ञान का भंडार थी।

राजगोपाल सिंह वर्मा (टैगोर की अल्पचर्चित विदुषी बहन की जीवनी) द्वारा रचित 'स्वर्णा' टैगोर की बड़ी बहन पर आधारित है। उनके पिता महर्षि देवेंद्रनाथ, माता सारदा सुंदरी, पति जानकीनाथ घोषाल, बहने सौदामिनी, सुकुमारी, सरतकमारी, भाई दिग्जेंद्र नाथ, हेमेन्द्रनाथ, सत्येन्द्रनाथ, ज्योतिरिन्द्रनाथ, रवींद्रनाथ, बेटिया हिख्यमयी देवी, उर्मिला देवी, सरला देवी, बेटा ज्योत्सनाथ थे। जिस वर्ष 1856 में स्वर्णा का जन्म हुआ था वहां की महिलाओं को विधवापुनर्विवाह का अधिकार मिला था। स्वर्णा को घर में 'न' दीदी कहा जाता था। टैगोर परिवार में खुलेपन की बयार बहा करती थी। स्वर्णा अपने पिता की बहुत आभारी रही कि उन्होंने उन्हें वह शिक्षा दी जिसका तात्कालीन हिंदू समाज में सर्वथा अभाव और सूनापन था। अध्ययन और दीक्षा हम घर में महिलाओं के लिए भोजन और मनोरंजन की तरह था। हिमालय से लौटने के बाद देवेंद्रनाथ ने बेटियों की शिक्षा के लिये संस्कृत की अध्यापिका और नियम तोड़कर आचार्य रखे जो सारे विषय पढ़ाते थे।

स्वर्णा की अच्छी आदत थी वह घर के बड़ों का सम्मान किया करती और उनके क्रिया कलापों में गहन रूचि रखती। बड़े द्वा द्विजेन्द्रनाथ जो संगीत प्रेमी थे तरह तरह के वाद्य यंत्र बजाते थे उन दोनों का आपस में बहुत स्नेह था। 1861 में पढ़ाई के लिये उन्हें ब्रिटेन जाना पड़ा। दूसरे भाई हेमेंद्रनाथ ने स्वर्णा को बंगाली भाषा और साहित्य की ओर खींचा। ज्योतिरिन्द्रनाथ कहानियों किस्सों से बच्चो को ज्ञान बांटते थे। स्वर्णा के उपन्यास लेखन और कहानी का श्रेय उन्हीं को जाता है। 12 वर्ष की आयु में स्वर्णा का बाल विवाह 27 वर्ष जानकीनाथ से हुआ। स्वर्णा ने माता-पिता से दबी जुबान से विवाह का विरोध भी किया था दरअसल स्वर्णा की पीढ़ी सारदासुंदरी माँ की तुलना में एडवांस्ड थी पर अपनी पुत्रियों की तुलना में पिछड़ी थी अर्थात् असमंजस में थी।

बस, एक बात अच्छी हुई ठाकुर परिवार दामादों को घर जमाई रखता था लेकिन स्वर्णा के पति ने इनकार कर दिया। स्?वर्णा इस कारण घोषाल हो गई। जानकी नाथ को ब्रह्म समाज की लड़की से विवाह करने के कारण परिवार से बेदखल किया गया। हालांकि बाद में उनकी जमीदारी मिल गई। स्वर्णा को आगे बढ़ने में उनका खूब सहयोग मिला। 1870 में स्वर्णा ने पुत्री हिरण्यमयी को जन्म दिया। जानकीनाथ थिओसोफिस्ट थे। उन्हें विदेश जाना पड़ा तो स्वर्णा मझले द्वा जो भारतीय सिविल सेवा के पहले अफसर थे के पास 1 साल के लिये बंबई चली गई। वहां उन्होंने अंग्रेजी की शिक्षा खूब अच्छे से ली। वहीं उनके बेटे ज्योत्सनाथ का जन्म हुआ और उसके बाद सरला देवी (पुत्री) का जन्म हुआ।

अब घोषाल बाबू ने आलीशान बंगला लिया जहां रोज़ स्वर्णा के भाई भाभी, साहित्य संगीत, भोजन की महफिल जमती। जब बैरिस्?टरी के लिए जानकी नाथ को इंग्लैंड जाना पड़ा तो स्वर्णा तीनों बच्चों को लेकर मायके आ गई और साहित्य की दुनिया में डूब गई। सरला की छोटी बेटी को मां का व्यस्त रहना पसंद नहीं था। उसने व्यंग्य से कहा कितना अंतर आया इन सालों में, आपके पास भी वह समय नहीं होता कि हम बच्चों की तरफ ध्यान दे।

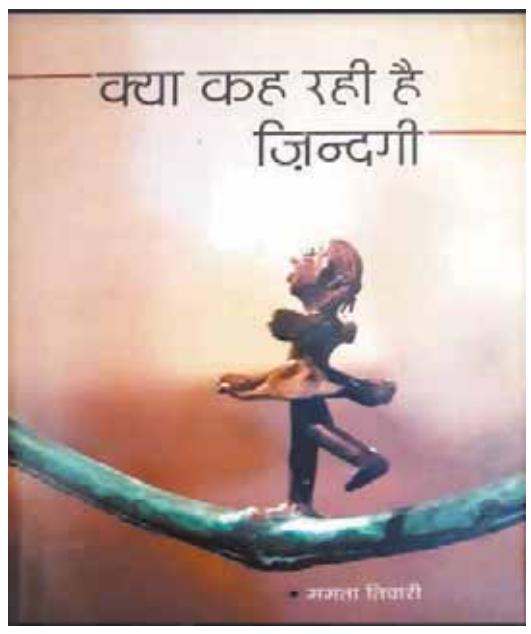

स्वर्णा ने मुस्कुराते हुये कहा अब वो ध्यान रखेगी।

दरअसल सरला बहुमुखी प्रतिभा की थी। थोड़ी अलग, जिद्दी थी। रवींद्रनाथ की प्रिय भांजी थी और उन्हीं के नक्शे कदम पर चलती थी। बंगाल की महिला को सशक्त उसने ''भारतस्त्री महामंडल'' बनाया। सरला को बिना बताये उसका विवाह कर दिया और वो राष्ट्रवादी पति रामभुज दत्त चौधरी के साथ पंजाब चली गई। सरला की कहानी तीसरे भाग में कही जायेगा। स्वर्णा के लिये जोड़ासांको में दूसरी मंजिल का आधा हिस्सा था। आधा द्विजेंद्रनाथ व उनकी पत्नी कांदबिरी देवी का था जिनकी रवींद्र नाथ से बहुत जमती थी। अचानक छोटी पुत्री स्वर्णा की अकस्मात् मृत्यु से जानकीनाथ पढ़ाई छोड़ इंग्लैड से लौट आये। इसी बीच ज्योतिरन्द्रनाथ ने पियानों पर धुन निकालने, रवींद्रनाथ और स्वर्णा ने गीत लिखने में महारत हासिल की।

यूं समझे उनके घर में साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ चरम पे थी। 1876 में स्वर्णा का उपन्यास ''दीपनिर्वाण'' चर्चा में आया ये पुस्तक उन्होंने अपने भाई सत्येनद्रनाथ को समर्पित की। इस अपार सफलता के बाद स्वर्णा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनका आदर्श पूछे जाने पर वे हमेशा बंकिमचंद्र का नाम लेती थी। परिवार के मिले जुले प्रयासों से एक पत्रिका के प्रकाशन की रूप रेखा बनी जिसका नाम ''भारती'' रखा गया। पूरा संपादक मंडल बनने के बाद भी कार्यभार स्वर्णा पर ही आया। उसके घर पर ही सब कार्य होते थे। पहली बार बंसत उत्सव नाम गीत-नाटिका प्रकाशन हुआ जिसमें सभी ने भाग लिया। रवींद्रनाथ उन दिनों लंदन में थे। अब स्वर्णा का नया उपन्यास ''छिनमुकुल' निकला। कविता संग्रह गाथा का प्रकाशन और ''मालती'' उपन्यास भी निकला। ''गाथा'' उन्होंने रवींद्रनाथ को प्रस्तुत की। रवींद्रनाथ ने जीवन में कभी भी कभी पुस्तक, लेखन में अपनी बड़ी बहन का ज़िक्र नहीं किया। स्वर्णा के पिता देवेंद्रनाथ विज्ञान के प्राध्यापक थे। स्वर्णा ने नया प्रयोग किया विज्ञान के निबंधो का संकलन निकाला। उन्होंने चित्रों के जरिए महिलाओं को सोलर सिस्टम समझाने की कोशिश की।

स्वर्णा के घर पर बड़े बड़े साहित्यकारों का आना जाना था महिलाओं के लिये उन्होंने ''सखी समिति'' की स्थापना की। स्वर्णा की बड़ी बेटी ने बैथ्यून कालेज से पढ़ाई की फिर उसका विवाह गया। अचानक स्वर्णा की भाभी कादंबिरी देवी ने आत्महत्या कर ली वे ''भारती'' में बहुत मदद करती थी। स्वर्णा ने आश्वासन दिया वो पत्रिका चलायेंगी पत्रिका को 8 बरस हो गये थे बहुत समय बाद स्वर्णा ने स्वतः संपादक पद त्याग दिया उनकी बेटियाँ पत्रिका संभालने लगी 'भारती'' को टक्कर देने के लिये रवींद्रनाथ ने ''बंगदर्शन'' का प्रकाशन शुरू किया। अब बहुत सी पत्रिकायें प्रकाशित होने लगी अब मणिलाल गंगोपाध्याय संपादक हुये। अचानक पति के अवसान के बाद स्वर्णा निराश में डूब गई। स्वर्णा ने विधवाओं के लिये पुनर्विवाह के स्थान पर उन्हें शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा अगर वे पनुर्विवाह ना करना चाहे। ''सखी समिति'' ने महिलाओं के लिये मेला लगाना शुरू किया स्वर्णकुमारी की बेटी हिरण्यमयी ने महिला शिल्पाश्रम की स्थापना की बीच में परिवार के साथ भ्रमण को जाने में उन्हें आनंद मिलने लगा। सरला जिद्दी, बिगडैल मानी जाती थी। स्वर्णलता के उपन्यास ''स्नेहलता बा पलीता''अर्थात् अपरूटेड वाहन का अंग्रेजी अनुवाद हुआ। ''फहाके'' को अनफिनिश्ड सांग्स रूप में ब्रिटेन में अनुवाद हुआ फिर तो विश्व में उनका नाम फैल गया। रवींद्रनाथ ठाकुर ने इस बात की आलोचना की। अंतिम चरण में विचित्रा, स्वप्नबानी मिलनरात्रि उपन्यास लिखे गये स्वर्णकुमारी की ''म्यूटिनी'' कहानी में ब्रिटिश सामाज्य को चुनौती दी हालांकि उन्होंने भी उतना काम किया जितना रवींद्रनाथ टैगोर ने किया पर स्त्री होने के कारण उन्हें उतनी प्रशंसा नहीं मिली पर फिर भी लोग उन्हें पसंद कर रहे थे।

उनका कल्याणी उपन्यास अंग्रेजी जर्मन भाषा में अनुदित है उन्हें ''जगततारिणी'' की उपाधि मिली। पति की मृत्यु के बाद वे घोषाल भवन में अकेली रहती थी बिना आभूषण के सफेद साड़ी में उनके 77वें जन्मदिन पर एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें उन्हें पुरस्कृत किया जाना था पर 3 जुलाई 1932 को उनका देहांत हो गया उनके लिये लिखा गया कि ये कितना दुखद था जब बंगाल उनके प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करने के लिये तैयार हो रहा था वे स्वर्ग के लिये प्रस्थान कर गई। स्टेट्समैन ने लिखा जब बंगाल महिलाओं के प्रति उदासीन था तब स्वर्णा जी द्वारा किये प्रयास बताते हैं कोई है जो औरों के लिये रास्ता बनाता है तो ऐसा एक महान नाम और कर्म करने वाली स्त्री को भूल जाना उचित नहीं ..... बस अब तो यही कह रही है ज़िंदगी

ग्राम्य जीवन की सुबह का मंजर !

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विश्व विख्यात लेखक ख़लील जिब्रान की दो लघु रचनाओं का अनुवाद ।

कैदी

मेरे पिता के बगीचे में में दो पिंजड़े हैं। एक में शेर है, जिसे मेरे पिता के गुलाम नतिवा के रेगिस्तान से पकड़कर लाए थे और दूसरे में एक सुंदर सी चिड़िया है।

हर रोज सुबह चिड़िया शेर से कहती है, ÷ ओ मेरे कैदी भैया! सुप्रभात जी। ÷

भेड़ और भेड़िया

%कभी हमारे घर को भी पवित्र करो।%
- बहुत करूणा से भरे हुए स्वर में भेड़िये ने एक भोली-भाली भेड़ से कहा

%मैं जरूर आती ,अगर तुम्हारे घर का मतलब तुम्हारा पेट नहीं होता।%

भेड़ ने बहुत नम्रतापूर्वक जवाब दिया।

नकल और असल का फर्क समझने के लिए...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

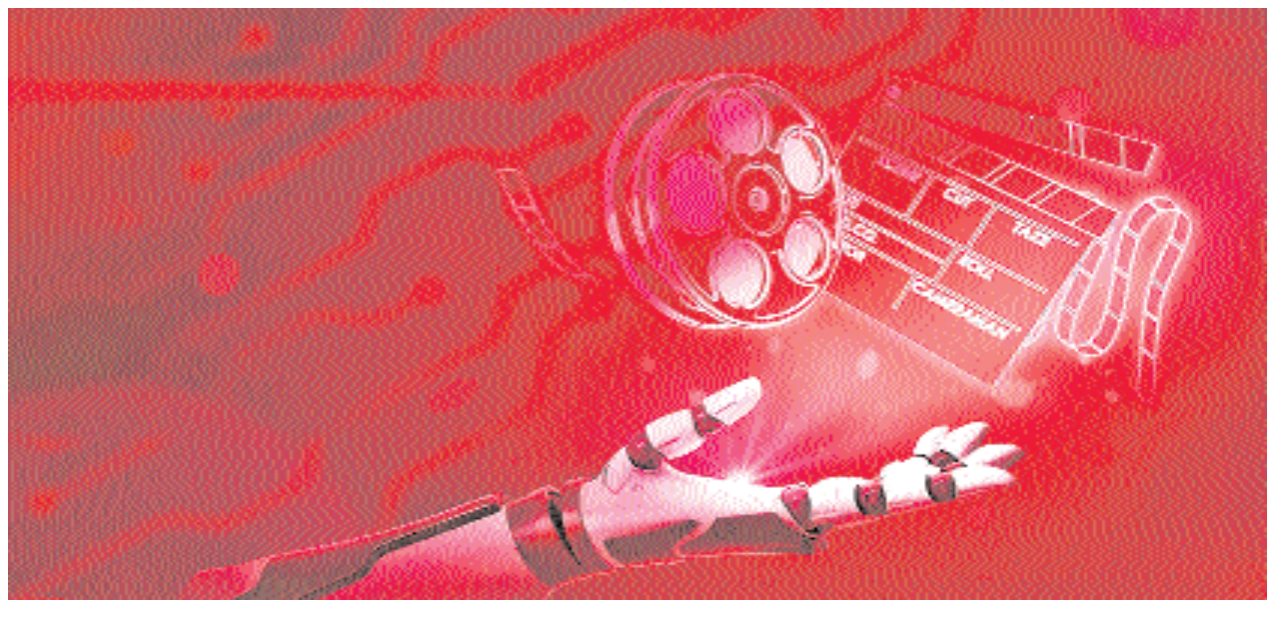

यू लंदन के 'वेस्ट एंड' में 'प्रिंस चार्ल्स सिनेमा' सांस्कृतिक और कला फिल्में दिखाता है। रविवार को 'द लास्ट स्क्रीनराइटर' की मेजबानी करने वाला था। हालांकि सिनेमा ने सोशल मीडिया पर कहा कि स्क्रीनिंग आगे नहीं बढ़ेगी। प्रिंस चार्ल्स सिनेमा ने कहा- विज्ञापन के बाद हमें फीडबैक मिला कि फिल्म के लेखक के बजाय एआई से फिल्म लिखवाई गई है।

'द लास्ट स्क्रीनराइटर' स्विस प्रोडक्शन है। फिल्म का तानाबाना 'मशहूर पटकथा लेखक' की कहानी बताता है कि एआई स्क्रिप्ट राइटिंग सिस्टम से उसकी दुनिया हिल जाती है। उसे एहसास होता है कि मानवीय भावनाओं को समझने में उनसे भी है। पटकथा का श्रेय 'चैटजीपीटी 4.0' को दिया जाता है। फिल्म उद्योग में एआई का इस्तेमाल बड़ा मुद्दा है। पिछले साल हॉलीवुड लेखकों की हड़ताल में समझौता हुआ कि एआई का इस्तेमाल स्क्रिप्ट ड्रॉफ्ट तैयार करने के लिए किया जा सकता है, लेखकों को काम का श्रेय मिलेगा। गानों से डॉयलाग डबिंग तक एआई का इस्तेमाल हो रहा है।

स्विस फिल्म निर्माता पीटर लुइसी कहते हैं कि उनकी फिल्म की स्क्रीनिंग का मकसद फिल्म उद्योग पर एआई के बारे में बातचीत करना है। लोगों को एआई के बारे में पूरी जानकारी नहीं है। बस, यही सुनते हैं कि पहली फिल्म पूरी तरह से एआई की लिखी है और उनका गुस्सा हम पर उतर जाता है। अगर पटकथा लेखक समय निकाल कर फिल्म देखें, पढ़ें और जानें कि हमने यह फिल्म क्यों बनाई तो शायद खिलाफ आवाज ही न उठे। एआई से बचना तो नामुमकिन ही है, लेकिन एआई और इंसानी कला में फर्क समझने की जरूरत है। हालत यह हैं कि कान फिल्म फेस्टिवल में एआई प्रोजेक्ट पर बात हो रही है कि एआई के दखल को पूरी तरह से रोका नहीं जाएगा, लेकिन अगर इसका साथ अपना लें तो आने वाले समय में वक्त और पैसे की बचत भी मुमकिन है।